

# सच की दरताक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सऱ्होकार की मासिक पत्रिका



पूर्वाधार एक्सप्रेस-वे पर  
क्रेडिट-वार



विश्व दिव्यांगता दिवस

उत्तर प्रदेश में चुनावी मेकअप

वॉरशिप 'आईएसी विक्रांत' की ताकत

# न्यू जे.पी. सेनेटरी



सरिता जायसवाल

टाइल्स, सी.पी. फिटिंग एवं सेनेटरी के विक्रेता



शिव कुमार गुप्ता

आर्य समाज रोड, मुगलसराय (चन्दौली) 232101, मो.: 9450096803



## सतीश सिंह चौहान



जिलाध्यक्ष भाजपा पिछड़ा प्रकोष्ठ  
जनपद चन्दौली



## आलोक सिंह



पूर्व सभासद  
युवा नेता  
भारतीय जनता पार्टी  
पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर  
जनपद चन्दौली



# सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 05, अंक : 08, नवम्बर 2021

संरक्षक  
इन्दू भूषण कोचगवे

संपादक

ब्रजेश कुमार

समाचार संपादक

आकांक्षा सक्सेना

खेल सम्पादक

मनोज उपाध्याय

उप सम्पादक

शिव मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार

दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)

प्रूफ रीडर

बिपिन बिहारी उपाध्याय

प्रसार प्रभारी

अशोक सैनी

प्रसार सह प्रभारी

अजय राय

अशोक शर्मा

जितेन्द्र सिंह

ग्राफिक्स

संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय

सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,

चेतगंज वाराणसी

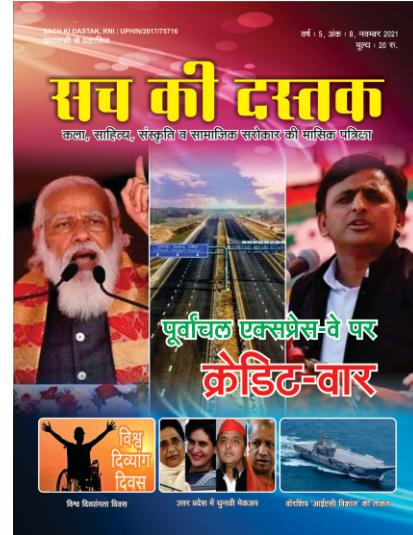
पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)

म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)

मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी ठोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।



## स्टेट ब्यूरो प्रभारी

- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
- देवेन्द्र कुमावत - राजस्थान
- दीपाली सोढ़ी - असम
- प्रभाकर कुमार - बिहार

## ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी.)
- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी.)
- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी.)
- प्रमोद शुक्ला जिला प्रभारी बाँदा (यू.पी.)
- प्रतीक राय जिला प्रभारी गाजीपुर (यू.पी.)
- विनीत कुमार रिपोर्टर पीडीडीयू (यू.पी.)
- डिम्पल सानन, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखण्ड)

## सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/- (डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak

A/c. No. : 13751652000024

IFSC Code : PUNB0137510

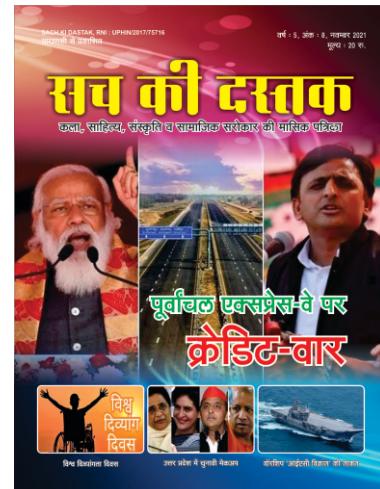
Punjab National Bank

# सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

## इस बार

क्र.सं.	लेख	पेज नं.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर - संत मलूक दास	05
3.	पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर क्रेडिट-वार - ब्रजेश कुमार, संपादक	06
4.	विश्व विकलांगता दिवस विशेष - इंदुभूषण कोचगवे(संरक्षक)	09
5.	उत्तर प्रदेश में चुनावी मेकअप - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज ऐडीटर	11
6.	देश में महिला न्यायाधीशों की हिस्सेदारी कम क्यों? - सोनम लवरंशी	15
7.	श्री राम जी के घर वापसी की प्रतीक्षा - श्रीमती वीनु जमुआर	17
8.	तामिहोपह्येश्चियम् - मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी	19
9.	असीम कृत मुखर नवगीत 'रचो नदी का मौन' - डॉ. अवधेश कुमार 'अवध'	22
10.	दिवाली मने/दिवाली का उत्सव - शिव मोहन सिंह (उपसंपादक)	24
11.	शहर की छोटी सी छत पर - स्वरांगी साने	26
12.	एक प्रेम कहानी /यहाँ पे कहाँ - अनुपम मिठास	28
13.	आंसू- अरुण कुमार मेनारिया 'सागर'	30
14.	बचपन /गाँव का मंदिर- कृति प्रिया मिश्रा	31
15.	हिन्दुत्व हमारी पहचान - धीरज कुमार शुक्ला 'दर्श'	33
16.	पूर्ति - सपना चन्द्रा	34
17.	पिता - राहुल यादव	35
18.	जरूरी है... - सुमन अग्रवाल 'सागरिका'	36
19.	भारत की शान वॉरशिप 'आईएसी विक्रांत'-सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	37
20.	लो बी. पी से पायें निजात- सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	39
21.	आंध्रप्रदेश की पारंपरिक मिठाई 'गब्बालू' - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	41
22.	फडणीस-मलिक और इग्स केस का दंगल - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	43
23.	क्रिकेट का हिस्सा 'वर्क लोड मैनेजमेंट' - मनोज उपाध्याय (स्पोटर्स एडीटर)	45
24.	अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव पैनल - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	47
25.	देव-दीपावली - रामनाथ साहू	49
26.	'देह विक्रय एक मजबूरी या शानो शौकत भरी ज़िंदगी की लालसा' - भावना ठाकर 'भावु'	50
27.	प्रेम पियाला भर भर दीजै - प्रफुल्ल सिंह 'बैचैन कलम'	52
28.	तुम्हारे बिना अधूरा हूँ मैं..... - अंकुर सिंह	54





# संपादकीय

हमारे पाठक बंधुओं को सबसे पहले दीपों का पर्व दीपावली, छठ पूजा, प्रबोधनी एकादशी व देव दीपावली की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

धीरे धीरे वर्तमान वातावरण चुनाव पर केन्द्रित होता जा रहा है। अगले वर्ष के प्रारम्भ में 5 राज्यों में चुनाव होने वाला है, लेकिन सभी पार्टियों में इसे लेकर नया उत्साह अभी से दिखना शुरू हो गया है। सबसे बड़ा चुनाव लोग उत्तर प्रदेश का ही मान रहे हैं।

वर्तमान समय में देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, रक्षामन्त्री इसी प्रदेश से हैं। ऐसे में यह चुनाव तो भाजपा के लिए साख का विषय बन गया है। वहीं सपा के लिए भी यह चुनाव नाक का सवाल है। उधर कांग्रेस भी ताल ठोक रही है। प्रियंका गांधी के आने से कांग्रेस के कार्यकर्ताओं में एक विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है।

बसपा को कैंडर गोट पर विश्वास है और समय आने पर जनता का झुकाव उनकी तरफ होगा यह विश्वास उनको है। आम आदमी पार्टी भी इस बार चुनावी अखाड़े में उतर रही है, वैसे आम आदमी पार्टी को भी लोग गम्भीरता से लेते हैं कि नहीं ये तो समय बताएगा। लेकिन उसे कमज़ोर आंकने की भूल कोई पार्टी नहीं कर सकती। विधानसभा के चुनाव में औवेशी के आ जाने से तथाकथित सेक्युलर पार्टियाँ सहम गई हैं। सभी विपक्षी पार्टी इसे भाजपा की बी टीम मानते हैं। विपक्षी पार्टियाँ सोचती हैं कि औवेशी के लड़ने से गोटों का धुग्गीकरण हो सकता है जिसका फायदा भाजपा को मिल सकता है।

आइये अब राजीनीतिक दृष्टि से यहाँ के मुद्दों को समझने का प्रयास करें। यद्यपि मुख्य मुद्दा रोजगार, सङ्क, स्वास्थ्य, महंगाई होना चाहिए, लेकिन लगता नहीं है कि ये

मुद्दे चुनावी मुद्दे बन पाएंगे। जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आता जा रहा है वैसे-वैसे फिर चुनाव में धर्म विशेष पर टिप्पणी होना शुरू हो गया है। कांग्रेस द्वारा हिंदू व हिंदुत्व की परिभाषा जनमानस के सामने रखी जानी शुरू हो गयी है। वहीं सपा द्वारा चिलम और रंग विशेष पोशाक पर टिप्पणी भी शुरू हो गयी है। जिससे संत समाज नाराज होता दिख रहा है। उधर औवेशी ने खुल कर मुस्लिम आकाओं को महान बतलाने का कार्य शुरू कर दिया है। ऐसे में चुनाव जनता के समस्याओं को मुद्दा बना कर लड़ा जाएगा यह कहना मुश्किल है।

सबसे अधिक परेशान तो युवा वर्ग होता है। चुनाव आता है तो युवा समझता है कोई पार्टी बेरोजगारी की बात करेगी और उन्हें जीतने के बाद रोजगार देगी। लेकिन चुनाव में मुख्य मुद्दे ही समय आने पर गायब हो जाते हैं। जो पार्टी सत्ता में पहुंचती है वह युवाओं को एक मोहरा बना लेती है। अजब सी विडंबना है। आज सरकार यदि लोन देती है या बैंक के माध्यम से दिलवाती है तो लोन मिल जाने पर उसकी गिनती रोजगार के रूप में करने लगती है जो बिल्कुल गलत है।

लोन लेने के बाद रोजगार प्रारम्भ करना जोखिम भरा होता है, चला तो ठीक, और नहीं चला तो वही लोन चुकाने में वह युवा परेशान हो जाता है। कभी कभी तो यह आत्म हत्या की वजह बन जाता है।

चुनाव जीतने के बाद बेरोजगारी को दूर करने की परिभाषा बदल जाती है। न तो समय पर वैकेंसी आती है न परीक्षा ही समय से होते हैं, और परिणाम भी समय से नहीं आता है।

वर्तमान समय में सत्ता की पार्टी ने दावा किया कि उसने कोरोना जैसे संकटकाल में मुफ्त राशन दिया, सभी को

स्वास्थ्य की सुविधा दी, रोग पर काबू पाया, इन दावों में दम है। विपरीत परिस्थितियों में राशन की मुफ्त में व्यवस्था करवाना सचमुच सराहनीय कार्य किया गया। मुख्यमंत्री द्वारा कोरोना काल में किये गए कार्य को जनता ने परस्न्द किया, लेकिन ये भी सत्य हैं कि योगी जी के शासन में कोरोना में आक्सीजन की अव्यवस्था के कारण कई मौतें भी हुईं परन्तु सरकार द्वारा तत्काल उचित कदम उठाए जाने के कारण विपक्षी पार्टियों के बीच यह मुद्दा नहीं बन पाया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि किसी भी अन्य राजनीतिक दलों के शीर्ष नेता इस काल में केवल सरकार की खामियों को ट्रीट करने के अतिरिक्त जनता की सेवा में सक्रिय रूप से सामने नहीं आए।

अब तो पूर्वाचल एक्सप्रेस वे को किसने बनाया किसने उद्घाटन किया उसका श्रेय लेने की होड़ मची हुई है।

लोगों को लग रहा कि विकास, रोजगार, महंगाई मुद्दे पर चुनाव हो तो ठीक है वरना राष्ट्रीय मुद्दे, धार्मिक मुद्दे कभी

भी राजनीति को सही दिशा नहीं दे सकते हैं।

इस्च की दस्तकड़ वराणसी की पत्रिका है और इसमें माता अन्नपूर्णा का जिक्र न हो तो ठीक नहीं होगा। माता अन्नपूर्णा की चोरी की गई मूर्ति 100 साल बाद वापस लाया जाना हम सबके लिए सौभाग्य की बात है। माँ अन्नपूर्णा की प्रतिमा जिस प्रकार विधिवत् पूजन कर के पुनःप्रस्थापित की गयी, वह निश्चित ही भारतीय संस्कृति के लिए एक सराहनीय कार्य है।

पिछले दिनों समाप्त हुई ट्रेंटी-ट्रेंटी विश्व कप में भारत के शर्मनाक प्रदर्शन को भुला पाना मुश्किल है। जिस प्रकार से भारतीय टीम बाहर हुई और पाकिस्तान से शिकस्त मिली यह खेल विशेषज्ञों के लिये चिंतन का विषय होना चाहिए।

अंत में पुनः आप सभी को देव दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

ब्रजैश कुमार

# संत मलूक दास

(1574-1682)



हरि समान दाता कोउ नाहीं।  
 सदा बिराजैं संतनमाहीं॥1॥  
 नाम बिसंभर बिस्व जिआवैं।  
 साँझ बिहान रिजिक पहँचावैं॥2॥  
 देइ अनेकन मुखपर ऐने।  
 औगुन करै सोगुन करि मानै॥3॥  
 काहू भाँति अजार न देई।  
 जाही को अपना कर लेई॥4॥  
 घरी घरी देता दीदार।  
 जन अपनेका खिजमतगार॥5॥  
 तीन लोक जाके औसाफ।  
 जनका गुनह करै सब माफ॥6॥  
 गरुवा ठाकुर है रघुराई।  
 कहैं मूलक क्या करौं बड़ाई॥7॥



# पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर क्रेडिट-वार



**ब्रजेश कुमार**  
संपादक सच की दस्तक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब पूर्वांचल पार्टी लगातार बीजेपी सरकार को घेर रही एक्सप्रेस-वे का उद्घाटन करने वाले थे पर है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव उससे पहले ही समाजवादी पार्टी के एक्सप्रेस-वे को उनकी ही सरकार की कार्यकर्ताओं ने इस एक्सप्रेस-वे पर उपलब्धि बताते रहे हैं। अखिलेश ये भी साइकिल चलाकर इसका उद्घाटन करने का दावा कर दिया। सपा कार्यकर्ताओं ने ही उद्घाटन कर रही है। लखनऊ से एक्सप्रेस-वे पर फूल चढ़ाकर और गाजीपुर तक बने 341 किलोमीटर लंबे साइकिल चलाकर इसे जनता को समर्पित कर दिया। इतना ही नहीं, समाजवादी पार्टी ने जनता को बधाई भी दे दी। बता दें कि लखनऊ से गाजीपुर तक जाने वाले पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे को लेकर समाजवादी जबर्दस्त पिच तैयार कर दी है। सपा-बसपा दोनों बीजेपी को इस एक्सप्रेस-वे का क्रेडिट नहीं लेने देना चाहती हैं। वहीं,



बसपा सुप्रीमो मायावती ने भी कहा था कि भाजपा पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे का श्रेय लेने की कोशिश कर रही है। पश्चिम यूपी में नोएडा को पूर्वी यूपी के जिलों से जोड़ने के लिए एक्सप्रेस-वे परियोजना की योजना तब तैयार की गई थी जब बसपा सत्ता में थी। तब केंद्र की कांग्रेस सरकार की तरफ से लगाई गई बाधाओं के कारण परियोजना शुरू नहीं की जा सकी। गौरतलब है कि 341 किलोमीटर लंबा पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पूर्वी और पश्चिमी यूपी को जोड़ेगा। एक्सप्रेस-वे लखनऊ के चांद सराय से शुरू होगा और गाजीपुर तक पहुंचेगा। इसे बनाने में 22 हजार 497 करोड़ रुपये का खर्चा आया है। अभी पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे 6 लेन का है, बाद में इसे 8 लेन भी किया जा सकता है। इस एक्सप्रेस-वे पर 18 फ्लाईओवर, 7 आरओबी, 7 बड़े पुल, 118 छोटे पुल, 13 इंटरचेंज, 271 अंडरपास और 503

पुलियां, 6 टोल प्लाजा, 5 रैंप प्लाजा हैं। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे को इस तरह से तैयार किया गया है कि इमरजेंसी में उस पर फाइटर प्लेन उतारे जा सकें। इस एक्सप्रेस-वे पर 3.20 किलोमीटर लंबी हवाई पट्टी लड़ाकू विमानों के टेक ऑफ और लैंडिंग के लिए बनाई गई है। उत्तर प्रदेश के विकास की दृष्टि से पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे की बहुत बड़ी भूमिका होगी। गौरतलब है कि एक्सप्रेस-वे के आसपास के क्षेत्र को औद्योगिक विकास के नजरिए से विकसित किया जाएगा और इसके दोनों तरफ इंडस्ट्रियल क्लस्टर बनाया जाएगा। इन गलियारों में फूड प्रोसेसिंग, शहरी यूनिट्स, वेराहाउस और लॉजिस्टिक पार्क बनाने की योजना पर काम हो रहा है। बेहतर कनेक्टिविटी से जुड़े होने के लिए ना कोई होटल है और ना ही ढाबा और मेडिकल स्टोर भी नहीं हैं।

सुल्तानपुर, अंबेडकरनगर, आजमगढ़, मऊ और गाजीपुर से होकर निकलेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने जुलाई 2018 में आजमगढ़ से इसकी आधारशिला रखी थी। यूपी सरकार के मुताबिक, अक्टूबर 2018 में इसका काम शुरू हुआ था और तीन साल में इसे पूरा कर लिया गया। इस पर अखिलेश यादव ने चुटकी लेते हुए कहा कि 'बीजेपी का सबसे पसंदीदा काम है शौचालय बनाना, लेकिन पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे में कहीं शौचालय नहीं है। इसलिए चढ़ने से पहले अपना ख्याल संयं रखें। यह सच भी है कि 341 किमी लंबा एक्सप्रेस-वे पर फिलहाल कोई पेट्रोल पंप मिलेगा, ना ही टॉयलेट की कोई व्यवस्था है। सफर के दौरान गाड़ी खराब हुई तो गैराज भी नहीं मिलेगा और फिलहाल खाने-पीने के लिए ना कोई होटल है और ना ही ढाबा और मेडिकल स्टोर भी नहीं हैं। पर धीरे-धीरे यह सब सुविधाओं का वादा

किया गया है। अखिलेश यादव ने कहा कि जब सारी सुविधाएं नहीं थीं तो जनता को किसके भरोसे इस हाइवे पर छोड़ दिया गया है, कम्प्लीट तो कराकर देते। आगे, उन्होंने यह भी कहा कि 'फ़ीता आया लखनऊ से और नयी दिल्ली से कैंची आई, सपा के काम का श्रेय लेने को मर्ची है 'खिचम-खिंचाई।' अखिलेश यादव ने कहा कि यह चुनाव के कारण जल्दबाजी में क्रेडिट ले रहे हैं जबकि पूर्वांचल एक्सप्रेस वे अभी पूरी तरह कम्प्लीट भी नहीं हैं। यह हम समाजवादियों का ही काम कर रहे, नया कुछ नहीं। यह बयानबाजी इसलिए तल्ख हो गयी जब से पीएम मोदी ने मंगलवार को अखिलेश का नाम लिए बिना उन पर सियासी तीर छोड़ थे। पीएम ने कहा था कि पहले की सरकारों ने यूपी को ऐसा बना दिया था कि यहां राह नहीं होती थी, यहां राहजनी होती थी। लेकिन, अब राहजनी करने वाले जेल में हैं और लोग अब खुद अपनी राह बना रहे हैं। मोदी ने यह भी कहा था कि पिछली सरकार के मुख्यमंत्री को मेरे साथ खड़े होने में भी गोट बैंक के नाराज होने का भय रहता था। इन बयानों से सियासी पारा चरम पर है जिसपर काऊंटर अटैक की सोच पर सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव बुधवार को गाजीपुर जिले के पूर्वी छोर पर स्थित हैदरिया गांव में विजय यात्रा का शुभारंभ करेंगे। यह वही गांव है जहां से पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे शुरू होता है। पूर्वांचल एक्सप्रेस के दूसरे छोर पर अखिलेश जनसभा को संबोधित कर केंद्र और प्रदेश सरकार पर जगबी हमला बोलेंगे। सपा प्रमुख की यह विजय यात्रा हैदरिया से शुरू होकर पूर्वांचल एक्सप्रेस-



वे से विभिन्न जगहों पर रुकते हुए जनता खैर, यूपी चुनाव का परिणाम जो भी हो से संवाद करेगी और आजमगढ़ तक पर गौर करने योग्य बात यह है कि जाएगी। इसके लिए हैदरिया से लेकर मऊ पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर घमासान यूंहि जिले की सीमा तक कई जगह स्वागत नहीं है इसके चुनावी मायने हैं। बता दें कि और संवाद केंद्र बनाए गए हैं। इसे यूपी पूर्वांचल एक्सप्रेस वे रूपी जंग फतह करने चुनाव की दृष्टि से देखें तो इस बार ओम के बाद ही यूपी की सत्ता पर कोई पार्टी प्रकाश राजभर के नेतृत्व वाली सुहेलदेव मजबूत गोट पा सकती है, क्योंकि राज्य भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) सपा के की 403 विधानसभा सीटों में से यूपी के 28 जिले पूर्वांचल में आते हैं, इनमें कुल 164 विधानसभा सीटें हैं। इसे साधने के लिए सभी राजनीतिक दल लगे हुए हैं। 2017 के चुनाव में पूर्वांचल की 164 में से बीजेपी ने 115 सीट पर कब्जा जमाया था। जबकि सपा ने 17, बसपा ने 14, कांग्रेस को 2 और अन्य को 16 सीटें मिली थी। अब देखना ये होगा कि यूपी के विधानसभा चुनाव में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे किस पार्टी के लिए मुफीद साबित होगा और बेसुध बेरोजगारों का कितना भला होगा और अपराध /अन्याय के मामलों को देखते हुए जनता किसे चुनेगी। सच तो यही है कि जीतते हमेशा नेता हैं और हारती हमेशा जनता है। बाकि निहायत एम्स और एक उर्वरक कारखाना के साथ गरीब राम भरोसे...।

वाराणसी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर परियोजना का उद्घाटन करने वाले हैं।

विश्व विकलांगता दिवस विशेष

# दिव्यांगता



इन्दु भूषण कोचगवे  
देहरादून

1 श्रवण से सुन नहीं सकता, अधर आभास देते हैं।  
इशारे से बताते हो, नयन सब भाँप लेते हैं।  
बधिर कहकर ज़माने ने, रुलाया आज तक लेकिन,  
सफलता की घड़ी में बस, विधाता साथ देते हैं।

2 हुए बाधित नयन लेकिन, मुझे झुकना नहीं आया।  
बहा कर नीर नयनों से, कभी रोना नहीं भाया।  
अगर सामर्थ्य है मुझमें, सफलता दौड़ आएगी,  
मुसीबत लाख आयी पर, मुझे रुकना नहीं आया।

3 नयन तो खो दिया मैंने, श्रवण से सुन नहीं सकता।  
व्यथा तो हो रही लेकिन, जुबाँ से कह नहीं सकता।

बचा बस स्पर्श ही केवल, अगर मस्तिष्क है साथी,  
इन्हीं के साथ चलता हूँ, मगर मैं थक नहीं सकता।

4 हुए असमर्थ अंगों से, उन्हें विकलांग कहते हो।  
छिपी है लाख क्षमताएँ, नहीं स्वीकार करते हो।  
तिरस्कृत हो रहे लेकिन, दिखाया विश्व में जौहर,  
पदक तो पा रहे ये ही, अगर विश्वास करते हो।

5 नहीं मस्तिष्क में क्षमता, न धीरज का पता इनको।  
लिखे जो शब्द पुस्तक में, कभी ना पढ़ सके उनको।  
कभी बैठे हैं कुर्सी पर, कभी लेटे वो बिस्तर पर,  
जहाँ से चाहते क्या हैं, नहीं समझा सके जग को।

6 अनाथों की कहानी है, यहाँ बचपन बिराना है।  
कभी कूड़ा, कभी कर्कट, कभी कीचड़ उठाना है।  
मिला बस दर्द ही केवल, बिता कर नर्क का जीवन,  
न पढ़ने का मिला अवसर, न रोटी का ठिकाना है।

7 दिया जो नाम अपनों ने, उसी के साथ रहता हूँ।  
नहीं सजती वहाँ महफिल, जहाँ मैं काम करता हूँ।  
नहीं मैं जानता लेकिन, असल पहचान ही अपनी,  
सदा बस बाँटा खुशियाँ, इसी में मस्त रहता हूँ।

8 मिली यह ज़िन्दगी जब से, इसी से प्यार करता हूँ।  
सभी हैं व्यस्त जीवन में, मगर मैं राह चलता हूँ।  
पता लगता नहीं मुझको, कि कितनी दूर है मंज़िल,  
निरन्तर कर्म करके भी, नहीं कुछ आस रखता हूँ।

9 सजा कर स्वप्न नयनों में, सदा सम्पर्क करता हूँ।  
सही सहयोग मिलता है, तभी सत्कर्म करता हूँ।  
मिला संस्कार ही ऐसा, जगाता भाव सेवा का,

समर्पित भावना मेरी, सभी से प्यार करता हूँ।

10 दुखद अनुभाग जीवन का, सदा आधार बनता है।  
सुखद अनुभूतियाँ होंगी, यही विश्वास पलता है।  
दुखों में दर्द बसता है, सभी हम जानते लेकिन,  
मधुर व्यवहार जीवन का, सदा शृंगार करता है।

11 जली जब स्नेह से बाती, जगा दी दीप की ज्वाला।  
सुई चुभती सुमन में तो, बनाती प्रेम की माला।  
तपा जो स्वर्ण पावक में, वही तो हार बनता है,  
सकेगी बन वही मीरा, पिये जो विष भरा प्याला।

12 मिटा दे दर्द औरों का, वही मैं गीत गाता हूँ।  
सजाकर शब्द में सरगम, सभी से प्रीत पाता हूँ।  
दिया जो कुछ विधाता ने, बनी वह रागिनी मेरी,  
तुम्हारा प्यार है केवल, इसी से जीत जाता हूँ।



समझ ना आया  
ऐ जिंदगी तेरा ये  
फलसफा,  
एक तरफ कहती है  
सबर का फल  
मीठा होता है  
और दूसरी तरफ  
कहती है  
वक्त किसी का  
इंतजार नहीं करता.

#hirdaymaruchequiarati

# उत्तर प्रदेश में चुनावी मेकअप



आकांक्षा सक्सेना  
न्यूज एडीटर सच की दस्तक

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव का वोट पाने के लिए कोई नेता मुस्लिम एचडी मेकअप अब युद्ध स्तर पर है। सबको जनता के बीच अच्छा दिखने दर्शनगुरुओं की चौखट पर दिखाई नहीं देता है। ताज्जुब है कि इस बार नेतागण यानि चमकने की होड़ मची हुई है। दरगाहों में चादर चढ़ाते भी नज़र नहीं आये। वैसे, ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के नेता असदुदीन ओवैसी जरूर अपवाद हैं जो मुस्लिम वोटों की खुल कर पैरवी करने में लगे हुए हैं पर वह जमीनी तौर पर कितने गरीब और बेरोजगार मुस्लिम लोगों के हितेषी हैं यह मुस्लिम स्टूडेंट्स वोटर बखूबी जानते हैं। कड़वा सच तो यह है कि गरीब का कोई नहीं है। अच्छा यह रहा है कोरोना काल में भारत सरकार /बीजेपी ने हर किसी को भरपूर राशन दिया कि कोई भी भूखे पेट

नहीं सोया। यह बेहद सराहनीय है। जिसमें योगी सरकार ने गरीबों को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण लॉकडाउन भी नहीं किया था। अँकडे कहते हैं कि जब से योगी सरकार है, चोरी, लोगों की पकड़ें, गुण्डागर्दी बहुत कम है और तो और माफियाओं के मंसूबों पर बुलडोजर चलाये जा रहे हैं पर यूपी के सरकारी शिक्षक परेशान हैं कि वह ऑनलाइन काम करें या स्कूलों में बच्चों को पढ़ायें, जूनियर में जिस स्कूल में हेड नहीं है उसको सहायक ही हेड बनकर देख रहा है वो भी कम्पोजिट हुए प्राथमिक और जूनियर स्कूल दोनों शामिल हैं। अब वह हेड का काम जैसे - बैंक का काम मिडडेमील का काम ऑनलाइन काम करे या बच्चों को पढ़ाये। जूनियर में एक शिक्षक हर विषय पढ़ाने को विवश, खेल शिक्षक नहीं, उधर सरकारी पैसा समय से नहीं आता। ऊपर से रसोइया लोगों का पैसा लटका हुआ है। बस यह है कि गुण्डागर्दी कम होने से यूपी के लोग योगी जी से खुश हैं। गौरतलब है कि कांग्रेस महासचिव और यूपी प्रभारी प्रियंका गांधी जी ने आगामी चुनावों में महिलाओं को 40 फीसदी टिकट देने का ऐलान कर दिया है। उन्होंने कहा है कि यह निर्णय पार्टी में आम सहमति से हुआ है। यदि मेरी मानी गई तो आने वाले समय में यह आरक्षण और बढ़ेगा। इसलिए यहां पर यह सवाल लाज़मी है कि जब संख्या बल ही लोकतंत्र, सियासत और आरक्षण का आधार है तो फिर आधी आबादी के लिए महिलाओं के लिए पूरा 50% टिकट यानी 50 फीसदी आरक्षण क्यों नहीं? और सिर्फ टिकट में ही क्यों, पहले अपनी पार्टी

के संगठनात्मक ढांचे में तो महिलाओं के लिए 50 फीसदी अपेक्षित! जगह बनाइए। इस वक्त तो उज्जवला योजना और तीन तलाक नियंत्रण कानूनों से महिलाओं का वर्ग पूरी तरह से पीएम नरेंद्र मोदी और भाजपा सरकार के पाले में है। हां, कुछ राज्यों में महिलाओं को यदि इससे भी अच्छा विकल्प मिला है तो उन्होंने 'कमल' का मोह त्याग कर अन्य को भी जिताया है। इसलिए प्रियंका गांधी की नये पैंतरे के लिए पर्याप्त स्पेस की गुंजाइश है, यदि संसद विधान मंडलों में महिलाओं को मात्र 33 प्रतिशत आरक्षण देने-दिलाने हेतु पार्टी नेतृत्व के पुराने दांव-पेंचों को भी यदि मतदाता भुला दें तो! यह भी सच है और स्वागत योग्य है कि, जिस प्रकार से राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने को लेकर प्रियंका गांधी जी चिंतित दिखाई दे रही हैं, उसी प्रकार से यदि वो सचमुच अपने मुद्दे पर अडिग रहीं तो राजनीतिक परिवृत्त्य में महिला प्रतिनिधियों की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए पिछले दशक में प्रस्तावित आरक्षण एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए महिलाओं को लोकसभा और सभी राज्यों की विधान सभाओं में 50% प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने संबंधी महिला आरक्षण विधेयक को भी तत्काल पारित किया जाना आवश्यक है। आज भी गांवों में महिलाएं प्रधान जरूर बनती हैं पर सिर्फ कागजों में, पर प्रधानी उनके पति ही करते नज़र आते हैं। हमें इस ओर भी व्यापक सुधार करने की जरूरत है। वैसे तो 73वें तथा 74वें संविधान संशोधन के फलस्वरूप आरक्षण प्रावधानों से

पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, लेकिन इससे भी बड़े प्रयासों की आवश्यकता है। शक्तिपूजा वाले भारत देश में इस समय लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व केवल 14.8 प्रतिशत है। जोकि मंथन करने का विषय है। लेकिन, दुःखद बात यह है कि नेताओं की कथनी और करनी में अंतर है। भारत के लोकतंत्र के लिए यह दुःखद ही है कि पिछले सत्तर सालों में लोकसभा में चुनी हुई महिलाओं की मौजूदगी दोगुनी भी नहीं हुई है। बात प्रियंका गांधी की चल रही है तो याद आता है कि कांग्रेस में एक नेता थे देवकांत बरुआ। बरुआ जी कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे थे। बरुआ की पहचान कांग्रेस के दिग्गज नेता सहित पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा के वफादारों में थी। बरुआ जी ने ही आपातकाल के दौरान 1975 में नारा दिया था, 'इंदिरा इज इंडिया एंड इंडिया इज इंदिरा'। यह नारा उस वक्त इंदिरा गांधी की ताकत को दिखाता था। एक समय इंदिरा जी को 'कामराज की कठपुतली' और 'गूंगी गुडिया' कहा गया पर प्रधानमंत्री बनने के बाद दुनिया ने उनका एक अलग रूप देखा। बैंकों का राष्ट्रीयकरण, पूर्व रजवाड़ों के प्रिवीपर्स समाप्त करना, 1971 का भारत-पाक युद्ध और 1974 का पहला परमाणु परीक्षण... इन फैसलों से इंदिरा जी ने अपनी ताकत दिखाई। हालांकि 1975 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उनके निर्वाचन को रद्द कर दिया। इसके बाद इंदिरा ने आपातकाल लागू कर दिया। इसी समय नारा आया था 'इंदिरा इज इंडिया और इंडिया इज इंदिरा' का नारा। हालांकि, इसके ठीक बाद 1977 में



हुए चुनाव में कांग्रेस बुरी तरह हार गई थी। मंथन में पता चला कि यह नारा ही निगेटिव साबित हुआ। पर आज इसी नारे को अब 2021 में कांग्रेस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी पर 'फिट' करने की कोशिश में लगी है। कांग्रेसी ऐसा माहौल बना रहे हैं जैसे 'मोदी ही भारत हैं, भारत ही मोदी हैं।' जहां मोदी से लड़ते-लड़ते कांग्रेसी, देश विरोध पर उतर आते हैं। पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक के समय, कश्मीर से धारा 370 हटाये जाने के मौके पर, नागरिक सुरक्षा कानून (सीए), चीन से विवाद के वक्त, नये कृषि कानून के विरोध के नाम पर कांग्रेसी जिस लहजे में बयानबाजी कर रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि मोदी राज में भारत की अंतरराष्ट्रीय पटल पर जब कभी किरकिरी होती है तो कांग्रेसियों को मानो 'जश्न' मनाने का मौका मिल जाता है। इसीलिए कांग्रेसी /विपक्षी सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगते हैं। हाल यह है कि किंग्रेट के मैदान में भारतीय क्रिकेट टीम को पाकिस्तान से हारती है तो कांग्रेसी नेता सोशल मीडिया पर चटकारे लेते हैं। जैसे- कांग्रेस की नेशनल मीडिया कोऑर्डिनेटर राधिका खेड़ा ने अपने ट्वीट में लिखा, 'क्यों भक्तों, आ गया स्वाद? करवा ली बेइज्जती???' बता दें कि सोशल मीडिया पर मोदी समर्थकों के लिए इस ट्रम का इस्तेमाल किया जाता है। लिहाजा, कांग्रेस लीडर ने एक तरह से टीम इंडिया की हार को मोदी से। तो कुछ लोगों ने इस्लाम की जीत तक कह डाला। यह सिलसिला 2014 से मोदी के प्रधानमंत्री बनने से शुरू हुआ था जो आज बदस्तूर जारी है और 2024 के लोकसभा चुनाव तक जारी ही रहेगा। यह लोग मोदी फोटोबिया के चलते देशहित में भी कुछ सुनने को ही तैयार नहीं हैं। गांधी परिवार को लगता है कि मोदी की इमेज को खंडित करके वह कांग्रेस के सुनहरे दिन गापस ला सकते हैं, तो यह एक दिवास्वर्ज है। चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर जी(पीके) ने इसको लेकर सटीक भविष्यवाणी की है कि भाजपा आने वाले कई दशकों तक भारतीय राजनीति में ताकतवर बनी रहेगी। वहीं राहुल जी के संबंध में प्रशांत जी का कहना था कि वह (राहुल गांधी जी) पीएम मोदी जी को सत्ता से हटाने के भ्रम में न रहें, जबकि राहुल गांधी कहते रहते हैं कि मोदी की सत्ता खत्म होना समय की बात है। देखा जाये

तो भारतीय राजनीति का स्तर इतना गिर गया है कि माओवादियों के खिलाफ कार्रवाई करना अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला बताया जाता है। एक तरफ कहा जाता है कि आतंकियों का कोई धर्म नहीं होता है तो दूसरी ओर आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई होती है तो इसे सांप्रदायिकता से जोड़ दिया जाता है। वहीं जब कोई हिन्दू देशद्रोह के मामले में पकड़ा जाता है तो उसकी जाति बताई जाती है। इसी तरह से अपराध के किसी मामले में आरोपित यदि मुसलमान होता है, तो उसे साजिश के तहत फंसाये जाने की बात होने लगती है। सबसे खास बात यह है कि मोदी के नाम पर भारत की छवि को चोट पहुंचाने की साजिश में नेता ही नहीं कई गणमान्य हस्तियां भी बढ़-चढ़कर लॉबिंग करती हैं। इसीलिए कोई कहता है कि भारत अब रहने लायक नहीं रहा तो किसी को हिन्दुस्तान में डर लगता है और पोस्टर गैंग, अवार्ड वापसी गैंग प्रकट हो जाता है पर जब किसी हिंदू का दिन - दहाड़े मर्डर कर दिया जाता है तो यह सब गैंग और सैक्यूलर लोगों की तोपों के गोले ठण्डे पड़ जाते हैं। जब कोई मुस्लिम मंत्री अपनी किताब में हिंदुत्व को आतंकी संगठन से तुलना करता है तब ये अवार्ड वापसी, पोस्टर, मोमबत्ती गैंग, तथाकथित सैक्यूलरगैंग किस बिल में घुस जाता है। हम सब कब सुधरेंगे कि मानवता के नाम पर तो कम से कम एक रहें। वैसे चुनाव का माहौल है हिंदू-मुस्लिम होना तो तय है। वैसे उत्तर प्रदेश में चुनावी समर ब्यूटीपार्लर तक पहुंच चुका है। दूल्हे और बाराती अपने अपने खेमे/जनवासा में अपनी बिगड़ी सूरत को



वारों के फेशियल से लीपापोती में लगे हैं। को सम्मानित जीवन दिया। यह बेहद चुनावी समर के मतदाता नायकों को धर्म, सराहनीय रहा और मायावती जी के संप्रदाय, आरक्षण और कई तरह के लालचरूपी नजरें यानि शगुन देकर पोटने में लगे हैं कुछ लोगों को देशी और अग्रेजी देकर भी अपना पाला भारी करने का प्रबंध जोरों पर है, भले ही नकली पीकर लोगों की जान पर बन आये पर साहिब! लोग का वोट से काम। इसी कड़ी में विधानसभा चुनाव में एक खास समुदाय के वोटों को लक्ष्य करते हुए 22 किस्म की प्राकृतिक सुगंधों को मिलाकर एक 'समाजवादी इत्र' लॉन्च किया है और दावा यह भी कि इसकी खुशबू से नफरत की राजनीति समाप्त होगी। खुद पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव जी ने सपा मुख्यालय में इस अद्भुत इत्र का उदघाटन किया। इत्र की शीशी तो छोटी थी, पर इसने राजनीतिक गलियारों में हलचल बढ़ी मचा दी है। पर सच कहें तो सपा की बेरोजगारी भत्ता देने की पहल लाखों बेरोजगारों के लिए अंधेरे में टार्च की तरह थी और उनकी साईकिल व लैपटॉप से भी बहुत स्टूडेंट्स लाभान्वित हुए थे जोकि इस परफ्यूम पैलिटिक्स से घोर निराशा में झूक गये हैं। उधर मायावती ने जिस तरह मैला ढोने पर रोक लगाते हुये खुले शौचालय (खुड़ी) तुड़वाकर जातिविशेष

को सम्मानित जीवन दिया। यह बेहद चुनावी समर के मतदाता नायकों को धर्म, सराहनीय रहा और मायावती जी के संप्रदाय, आरक्षण और कई तरह के लालचरूपी नजरें यानि शगुन देकर पोटने में लगे हैं कुछ लोगों को देशी और अग्रेजी देकर भी अपना पाला भारी करने का प्रबंध जोरों पर है, भले ही नकली पीकर लोगों की जान पर बन आये पर साहिब!

लोग का वोट से काम। इसी कड़ी में विधानसभा चुनाव में एक खास समुदाय के वोटों को लक्ष्य करते हुए 22 किस्म की प्राकृतिक सुगंधों को मिलाकर एक 'समाजवादी इत्र' लॉन्च किया है और दावा यह भी कि इसकी खुशबू से नफरत की राजनीति समाप्त होगी। खुद पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव जी ने सपा मुख्यालय में इस अद्भुत इत्र का उदघाटन किया। इत्र की शीशी तो छोटी थी, पर इसने राजनीतिक गलियारों में हलचल बढ़ी मचा दी है। पर सच कहें तो सपा की बेरोजगारी भत्ता देने की पहल लाखों बेरोजगारों के लिए अंधेरे में टार्च की तरह थी और उनकी साईकिल व लैपटॉप से भी बहुत स्टूडेंट्स लाभान्वित हुए थे जोकि इस परफ्यूम पैलिटिक्स से घोर निराशा में झूक गये हैं। उधर मायावती ने जिस तरह मैला ढोने पर रोक लगाते हुये खुले शौचालय (खुड़ी) तुड़वाकर जातिविशेष

का विवरण करते हुए जातिविशेष पर जनता को शांति मिली थी पर वह सिर्फ एक जातिविशेष पर ध्यान और नोटों की माला पहने पर जनता की नजरों में फीकी पड़ती चली गयीं। वैसे उत्तर प्रदेश की राजनीति में दलित वोटरों के बूते पर वैसे लेकर टिकट देने को मशहूर बसपा में इस बार भगदड़ मची हुई है। उसके वर्तमान विधायक और नेतागण अन्य दलों में भाग रहे हैं। लगता है कि शायद उनको बसपा का दलित वोट खिसकता नजर आ रहा है। इसीलिए वे पाले बदल रहे हैं और ब्राह्मण वोट के हथियाने में लगे हैं। पर ब्राह्मण जो योगी से कितने भी नाराज क्यों न हों पर वोट योगी को ही देंगे क्योंकि उनके लिए हिंदुत्व /धर्म /संस्कृति रक्षा पहले है। इस बात के डर से हर नेता हिंदुत्व की ओढ़नी ओढ़े घूम रहा है। प्रदेश कांग्रेस में भी उठा- पटक तेज है। बसपा के पूर्व सांसद कादिर राणा, बहुजन समाज पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष आरएन कुशवाह ने सपा का दामन थाम लिया। बुंदेलखण्ड के कांग्रेस प्रभारी व पूर्व विधायक गयादीन अनुरागी और पूर्व विधायक उरई विनोद चतुर्वेदी भी अपने सेंकड़ों समर्थकों के साथ सपा में

शामिल हुए। बसपा के पूर्व एमएलसी और ब्राह्मण नेता सुबोध पाराशर ने भारतीय जनता पार्टी का दामन थाम लिया है। भाजपा के हिंदू वोटर को बांटने का प्रयास किया जा रहा है। मिहिरभोज की प्रतिमा को लेकर गूजर और चौहानों की मियाने खाली हैं, यानि तलवारें बाहर। दोनों मिहिर भोज को अपना माने हैं। जातिगत वोटों पर जबर्दस्त रार छिड़ा है। एक विवाद के बाद अब तो दोनों पक्ष मिहिर भोज की जगह-जगह प्रतिमा लगा रहे हैं। गोरखपुर में व्यापारी मनीष गुप्ता की मौत से प्रदेश के व्यापारियों में रोष है। अन्य दल इसका लाभ उठाने की कोशिश में हैं। लखीमपुर खीरी प्रकरण में केंद्र के गृह राज्यमंत्री अजय मिश्र टेनी के विरुद्ध चल रही कार्रवाई की बात से प्रदेश का ब्राह्मण नाराज होने लगा था। जोभी हो पर यूपी की जनता का एक बहुत बड़ा वर्ग अखिलेश यादव जी के और दूसरा बड़ा वर्ग योगी आदित्यनाथ जी के समर्थन में है। हाल ही में अखिलेश जी ने भगवाधारियों को चिलमजीवी से जोड़ दिया था जिससे यूपी के संत समाज में भारी रोष व्याप्त है, वह कह रहे हैं कि ओछी राजनीति में हमें न घसीटें। और इससे हिंदू वोट कटने की सम्भावना काफी बढ़ गयी है। बहरहाल... चुनावी शहालग अभी दूर हैं देखिए! घोड़ी कौन चढ़ा है? वैसे सत्तारूपी घोड़ी जो चढ़े, पर देश का विकास होना चाहिए, हर हाथ को रोजगार, आपसी प्यार और हर घर सुख - शांति और उल्लास रहना चाहिए। यही चुनाव के बिनामेकअप के प्राकृतिक ऐंडेंडे होने चाहिए। ■ ■

# देश में महिला न्यायाधीशों की हिस्सेदारी कम क्यों?



सोनम लववंशी  
भोपाल

समानता लोकतांत्रिक समाज की हो? वहीं अगर बात न्याय व्यवस्था की ही जीवन रेखा है। तो वहीं दूसरी तरफ करे तो स्थिति बहुत ही दयनीय नजर इतिहास इस बात का सदैव साक्षी रहा है। हाल ही में भारत के मुख्य किंहमारे देश में महिलाएं अपने अधिकारों आती है। हाल ही में भारत के को लेकर हर पल पर संघर्ष करती आई न्यायाधीश एन. वी. रमण ने भारत के न्यायलय में न्यायाधीशों की कमी की बात को लेकर हम एक नये युग की है। ऐसे में कहने को भले हम एक जहां समता और समानता की न्यायलयों में महिलाओं को 50 प्रतिशत पैरवी संविधान से लेकर संसद तक की नियुक्ति की मांग उठानी चाहिए।

जाती है, लेकिन यह हमारे समाज का ही गौरतलब हो कि आज भी भारत में एक स्याह पक्ष है कि आज भी महिलाओं महिलाएं सामाजिक दमन का शिकार हो को समान अधिकार नहीं मिल पाया है। फिर वह बात किसी भी क्षेत्र की क्यों न रही हैं। आज भी समाज में पितृसत्तात्मक

सोच का वर्चस्व है। यही वजह है कि महिलाओं को समान अधिकार नहीं मिल पाते हैं। न्यायमूर्ति रमण ने कहा है कि, 'यह अधिकार का विषय है, दया का नहीं।' अब ऐसे में आप सोच सकते हैं कि जो स्त्री समाज के लिए क्या कुछ नहीं करती है। उसकी स्थिति इक्कीसवीं सदी के भारत में कैसी है? ऐसे में भले ही देश की आजादी के 75 वर्ष हो गए हैं, लेकिन महिलाओं की स्थिति आज भी समाज में जस की तस बनी हुई है। सर्वोच्च न्यायालय की ही बात करें तो मात्र 11 फीसदी महिलाएं ही न्यायालय के सर्वोच्च पद पर आज के दौर में आसीन हैं जो कि कहीं न कहीं आधी आबादी के लिहाज़ से काफी कम है।

केंद्रीय कानून और न्याय मंत्रालय के आंकड़ों की बात करे तो सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट में 677 जजों में महिलाओं की संख्या मात्र 81 है। ऐसे में कितनी अजीब बिडम्बना है कि देश की न्याय व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका निम्नतम स्तर पर है जबकि समाज में सबसे प्रतापित वर्ग महिलाओं का ही है। हमारे देश में महिलाएं प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और राज्यपाल यहां तक की राष्ट्रपति के पद पर भी आसीन हुई हैं। लेकिन अब तक मुख्य न्यायाधीश के पद पर कोई महिला नहीं पहुँची, जो कहीं न कहीं समानता और स्वतंत्रता जैसे शब्दों को कमज़ोर बनाती है। इतना ही नहीं यह बात कहीं न कहीं इस ओर इशारा करती है कि उच्च न्यायालय के न्यायधीशों के चयन में लैंगिक पक्षपात होते आ रहा है और यह कहना भी गलत नहीं होगा कि न्यायपालिका पुरुष प्रधान क्षेत्र है। हमारे

देश में महिला वकीलों की संख्या तक सीमित है। जब महिला वकील कम हैं तो फिर महिलाओं के न्यायाधीश बनने की संभावना स्वतः ही नगण्य हो जाती है।

यह तो सर्विदित है कि महिलाएं देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं। लेकिन जब न्याय व्यवस्था की बात आती है तो उन्हें समान अधिकार नहीं दिए जाते हैं। फिर बात चाहे न्याय व्यवस्था की हो या अदालतों की या फिर आम जन-जीवन की। आज महिलाएं समाज के हर क्षेत्र में अपनी कामयाबी का लोहा मनवा चुकी हैं। लेकिन जब बात प्रतिनिधित्व की आती है तो महिलाओं का आंकड़ा कम हो जाता है। देखा जाए तो समाज में आज भी रुद्रिवादी परम्पराओं के नाम पर अपनी बात रखने का और स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकार महिलाओं को नहीं मिल पाया है। परम्पराओं के नाम पर समाज सदैव महिलाओं के सपनों की बलि चढ़ा देता है। हमारा संविधान हमें समता और स्वतन्त्रता का अधिकार तो देता है लेकिन यह भी सच है कि आज भी महिलाओं के साथ असमानता का व्यवहार किया जाता है। महिलाओं पर होते अत्याचार आज मीडिया जगत की सुर्खियों तो बनते हैं लेकिन कितने मामले हैं जहां महिलाओं को न्याय नहीं मिल पाता है। ऐसे में जब महिलाएं घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वहन अच्छे ढंग से कर सकती हैं तो प्रतिनिधित्व कर्यों नहीं कर सकती और एक बात तो तय मानिए जब तक महिलाएं नीति निर्माण और निर्णय लेने की क्षमता में अपनी भागीदारी नहीं निभाएंगी तब तक समाज में महिलाओं के अच्छे दिनों की

कल्पना सिर्फ़ काग़ज़ी ही मालूम पड़ती है। वहीं दुर्भाग्य तो देखिए आज हमारे देश का। एक तरफ़ मांग जिसकी जितनी हिस्सेदारी; उसका उतना प्रतिनिधित्व की हो रही, लेकिन यह बात आधी आबादी के लिए लागू नहीं होती। आखिर यह कितनी अजीब बात है। ऐसे में भले संविधान में अवसर की समता वगैरह-वगैरह लिखा गया हो, लेकिन वह सिर्फ़ लिखित रूप में ही शोभा बढ़ाने का काम कर रही है। वास्तविकता कुछ और ही है। आज हमारे देश में 17 लाख वकील हैं, लेकिन दुर्भाग्य देखिये की मात्र 15 फीसदी ही महिला वकील है। राज्य संघों की ही बात करें तो केवल 2 प्रतिशत ही यह सदस्यता है। यहां तक कि भारत की बार कॉसिल में एक भी महिला नहीं है। मौजूदा समय में देश में 60 हजार अदालतें हैं। लेकिन 15 हजार अदालतों में महिलाओं के लिए शैचालय तक नहीं है। जब देश की अदालतों की यह स्थिति है तो फिर सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत में महिलाओं के न्याय व्यवस्था और समान अधिकार की क्या स्थिति होगी? वहीं समाज का एक कड़वा सच यह भी है कि अगर चंद महिलाएं सर्वोच्च पदों पर आसीन भी हो जाती हैं तो वे समूची महिला जाति के अधिकारों की वकालत नहीं कर पाती। जो भी एक बड़े दुर्भाग्य की बात है। ऐसे में जब तक महिलाएं ही अपने अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठाएंगी तो फिर कैसे एक सभ्य और समतामूलक समाज की कल्पना सम्भव हो पाएगी? यह अपने-आप में एक सवाल है। ■ ■ ■

# श्री राम जी के घर वापसी की प्रतीक्षा



श्रीमती वीनु जमुआर  
पुणे

.. ये यादें धीरे-धीरे जिंदगी का हिस्सा बनती जा रही हैं....देखिए न-

'कार्तिक महीना काल से शुरू भेतय। सुखदेवा, महबीरवा कुम्हार घर गेले हल्य की नाय ? दीया-बाती, धीर सब इंतजाम कर लेले हाय ने बेबी माय...'.

(कार्तिक महीना कल से प्रारंभ हो जाएगा सुखदेव,(सहायक) महावीर कुम्हार के घर गया कि नहीं? दीया-बाती तथा धी इत्यादि का इंतजाम कर ली हो न बेबी की माँ...)

ममा (दादी) के ये बोल आज भी गूँजते हैं यादों के आंगन में। कार्तिक

महीने के प्रथम दिन से ही प्रत्येक शाम आंगन में स्थित तुलसी चौरे पर घर के

हर सदस्य के नाम का दीया थाली में सजा तैयार रहता। संग में कटोरी भर धुले चावल, लोटा भर जल तथा माचिस की डिबिया रखी होती। कुआँ के पास भी पानी की भरी बाल्टी और लोटा रखा रहता।

पापा से लेकर घर का प्रत्येक सदस्य पहले कुँए पर हाथ-पैर धोता फिर अपने नाम का एक दीपक जलाकर तुलसी पीडे पर रखता। दीया रखने से पूर्व चुटकी भर चावल चौरे पर रखा जाता और उसी पर दीप रखा जाता। जलते हुए दीपक के

चारों ओर हाथ को गोल घुमाते हुए जल से अर्ध्य देना अनिवार्य होता।

इसी दिन से हम आंगन के एक कोने में घरकुँडवा बनाना आरंभ करते।

ईंट और मिट्टी से विस्तृत अहाते के साथ किसी निपुण राज मिस्त्री की भाँति कभी एक मंजिला कभी दो मंजिला और कभी-कभी टैरेस के साथ तीन मंजिली इमारत का निर्माण कार्य शुरू हो जाता। मिट्टी तथा ईंट के टुकड़ों से दीवारें बना ली जातीं,

छत के लिए बाँस की खप्चियों का उपयोग करते जो झारखंड के प्रायः सभी घरों के पीछे बँसवाड़े में बहुतायत से उपलब्ध होते थे। आखिरी ऊपरी मंजिल की छत खण्डे (टाइल्स) के टुकड़ों से बनी होती।

मंशा ऐसी कि बीच में बड़े से आंगन के चारों ओर बरामदा तथा उस बरामदे से लगी बाईंस कमरों का वह घर जिसमें हम रहते थे, का छोटा प्रतिरूप हो यह घर कुँडवा! संग हो हमारे उन सपनों का समावेश जिनकी कमी हमें अपने घर में खटकती थी, मसलन कमरों में खिड़की का छोटा होना, अधिकतर देवी-देवताओं वाले कैलेंडरों का दीवारों पर टंगा रहना, दीवार में बनी आलमारियों का छोटा आकार इत्यादि-इत्यादि।

सपनों के अनुरूप घरकुँडे में खुली-बड़ी खिड़कियाँ हम बनाते, सरकंडा (एक प्रकार का घास) के गोल तने से उसका ग्रिल बनता, कार्डबोर्ड काट दरवाजे बनते तथा सचमुच के बीज तथा गेंदा के फूल के छोटे-छोटे पौधे बो कर एक ओर बगिया तथा दूसरी ओर बारी सजाते।

(गेहूं, मेथी, पालक, चना आदि दस दिन/दो सप्ताह में उग आते थे) ठीन के छोटे गोले डिब्बे को जमीन खोद कर फिक्स कर देते और पानी भर देते थे, कुंआ तैयार हो जाता।

बाहर चिकनी मिट्टी से दीवार की प्लास्टर करते। जब मिट्टी सूखने लगती, ममा चरकी (बर्तन मांजने वाली) जिसे हम चरकी फुफु कहते थे, से कह कर गोबर से लिपवा देती। एक-दो दिनों में गोबर सूख जाने पर खली और दूधी माटी से सफेद पुताई करते। अच्छी तरह सूख जाने तक ठहरते और फिर शुरू होता गेरू तथा सब्जियों के पत्तों से निकाले गए रस से बने नैसर्गिक लाल, हरे (सेम के पत्ते) पीले (हल्दी) तथा भूरे एवं काले (कोयला) रंगों से चित्रांकन का कार्य। सबसे ऊपर सूर्य देव फिर सूरजमुखी के फूल, पेड़-पौधे, गाय-बैल, बैल गाड़ी, सगड़-गाड़ी तथा त्योहारों के दृश्य! मांदर तथा तुरही बजाते- नाचते आदिवासी नर-नारी के चित्र एक ओर उकेरते वहीं दूसरी ओर कंधों पर हल-कुदाल लिए खेतों की ओर जाते हुए किसान तथा सिर पर गट्ठर उठाए स्त्रियों को भी स्थान मिलता। दिवाली को स्थानीय भाषा में सोहराय भी कहते थे तथा इस प्रकार के भित्ति-चित्र को छोटानागपुरी सोहराय माइना कहते थे।

इधर हमारी तैयारियाँ चलतीं उधर गाँव के कुम्हार, महावीर काका घरकुँडे में रहने वाले गुड़े-गुड़ियों तथा अन्य मिट्टी के खिलौनों को काया देते, रंग रोगन लगा कर तैयार कर देते। साथ ही नियमित आकार से छोटे आकार के दीये भी रंग बिरंगे रंगों में रंग कर दीपावली के दिन

सुबह सुबह ही ला देते। पूसा, घर का सब से पुराना सेवक जो परिवार के सदस्य जैसा ही था, आज भी है, दीयों में बाती और तेल डाल देता और मूर्तियों को हम अच्छे से जगह-जगह पर सजा देते। मूँछ वाली मूर्ति सुरक्षा हेतु किले के प्रवेश द्वार पर तैनात कर दी जाती।

सांझ होते ही दीये जला दिए जाते, घरौंदा जगमगा उठता। खील-बताशे तथा मोतीचूर के लहू कुल्हिया-चुकिया (मिट्टी के छोटे बर्तन) में भर कर गणेश जी एवं लक्ष्मी जी के सामने रख देते, ममा बड़े मनोयोग से हमें राम जन्म से लेकर उनके बनवास जाने, सीता हरण, दुष्ट रावण से राम जी का युद्ध तथा उनकी जीत की कथा सुनाती। हम सभी भाई-बहन (कुल मिला कर सत्रह) तब तो चर्चेरे-फुफेरे ममेरे मौसेरे नहीं होते थे बस भाई बहन होते थे, सो कुल-जमा नौ भाई और आठ बहनों की हमारी टोली बड़ी तन्मयता से राम कथा सुनते।

और-

अब हम बच्चों का घरौंदा मानो बस राम जी के घर आने भर की राह जोह रहा होता।

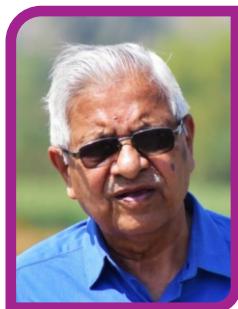


# तामिहोपक्षयेश्रियम्



वेदों में धन की देवी लक्ष्मी की स्तुति में एक सूक्त वर्णित है जिसे श्रीसूक्त कहा जाता है (ऋग्वेद, खिल सूक्त, 2.6)। इसी श्रीसूक्त का यह वाक्यांश है 'तामिहोपक्षयेश्रियम्' अर्थात् उस श्री या लक्ष्मी का मैं यहाँ आवाहन करता हूँ। लक्ष्मी की उत्पत्ति समुद्र मन्थन से निकले चौदह रत्नों में से एक के रूप में मानी जाती है। ये चौदह रत्न हैं:

श्री मणि रम्भा वारुणी, अमिय शंख  
गजराज।  
कल्पद्रुम शशि धेनु धनु, धन्वन्तरि विष  
बाजि ॥



मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी  
पूणे महाराष्ट्र

लक्ष्मी, कौस्तुभ मणि, अप्सरायें, मध्य, अमृत, शंख, ऐरावत हाथी, कल्पवृक्ष, चन्द्रमा, कामधेनु, शांग धनुष्य, धन्वन्तरि, हलाहल विष और उच्चैश्रवा नामक घोड़ा।

समुद्र मन्थन देव और असुर दोनों ने मिल कर किया था। ये दोनों दो प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। समुद्र मन्थन से प्राप्त रत्न भी उन्होंने अपनी अपनी प्रवृत्तियों के अनुसार बॉट लिये। यह संसार भी एक समुद्र है जिसका प्रत्येक व्यक्ति सतत मन्थन करता रहता है और उसे अपनी अपनी क्षमता के अनुसार रत्न प्राप्त होते भी रहते हैं। इनमें से प्रत्येक रत्न किसी न किसी प्रवृत्ति, विशेषता, गुण

अथवा भावना का प्रतिनिधित्व करता है और कौन किस रत्न को पाना चाहता है या किसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील रहता है उसी आधार पर उसके दैवीय अर्थात् सात्त्विक, आसुरी अर्थात् तामसिक या सामान्यतः पाये जाने वाले मानवीय या राजस स्वरूप का निर्धारण होता है।

लक्ष्मी संपत्ति का प्रतीक है। समाज में धन के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। 'सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति'। सुख के लिये धन आवश्यक है। निर्धन सुखी नहीं होता। 'लोकेषु निर्धनो दुःखी'। यहाँ तक तो ठीक है। पर यह धन मिलता कैसे है और जाता किसके पास है यह विचारणीय प्रश्न है।

**विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति  
पात्रता।**

**पात्रत्वाद्धनमाज्ञोति धनाद्वर्म ततः  
सुखम्॥**

प्रारम्भ होता है विद्या से। आज मानव सभ्यता का जो कुछ विकसित रूप हम देख रहे हैं उसका प्रारम्भ कहाँ से हुआ? आदिम वन्य पशुवत् जीवन शैली से भिन्न मनुष्य नामक इस पशु की जीवन शैली बनी ज्ञान से। प्रकृति द्वारा प्रदत्त अपनी विशिष्ट शारीरिक रचना के कारण मनुष्य ने पत्थर हाथ में उठा कर आखेट करना सीखा। उसी प्रकार विकसित मस्तिष्क के कारण उसने दो पत्थरों को रगड़ कर स्वयं अग्नि प्रज्वलित करना सीखा। इस प्रकार पंच महाभूतों में से एक को उसने अपने वश में किया। उसी समय से सभ्यता का जन्म हुआ। अतः हम कह-

सकते हैं कि मूल सीखने में है, ज्ञान में है, कुशलता में है, विद्या में है।

विद्या का फल होना चाहिये विनय। 'विद्या विनयेन शोभते'। यदि विद्या प्राप्त कर अहंकार आ गया, गर्व हो गया तो वह विद्या वन्ध्या है, निष्फल है। वह सुख का सोपान नहीं बन सकती। 'विद्या ददाति विनयम्'। विद्या और विनय दोनों से युक्त मनुष्य ही योग्य है। 'विनयाद्याति पात्रता'। यदि विद्यान है पर विनयी नहीं है, घमण्डी है तो वह समाज में आदृत नहीं होता। कोई भी उसे पात्र अर्थात् योग्य नहीं मानता। विद्या अर्थात् ज्ञान की उपयोगिता इसी बात में है कि वह दूसरों के कितने काम आती है।

**याचक को जो विमुख भेज दे उस  
धनपति का क्या उपयोग।**

**अयोग्य ही वह भिषज सदा है जिससे  
ठीक न होता रोग॥**

**निर्बल के जो काम न आये व्यर्थ  
बली वैसा है।**

**कर्म अकर्म बता न सके वह  
धर्मात्मा कैसा है॥**

यदि विद्या से दूसरों को कोई लाभ न मिलता हो तो ऐसे विद्यान् से समाज का क्या सम्बन्ध? किसी रोगी से कहा गया कि अमुक डॉक्टर बहुत विद्यान है; उससे दवा क्यों नहीं लेते? रोगी कहता है कि होगा विद्यान पर बड़ा घमण्डी है। सीधे मुँह बात नहीं करता। मैं मर जाना पसन्द करूँगा पर उससे अपमानित होना नहीं। तो ऐसी विद्वता व्यर्थ है। इसलिये विनययुक्त विद्या ही पात्रता प्रदान करती

है। हाँ, विद्याहीन विनयी भी व्यर्थ ही है। बड़ा नग्न है पर मूर्ख है। समाज के लिये उसका भी क्या उपयोग?

'पात्रत्वाद्धनमाज्ञोति'। योग्यता से धन प्राप्त होता है। इस प्रकार प्राप्त होने वाला धन यदि धर्म की ओर प्रवृत्त करे तो अंततः सुख की प्राप्ति होती है।

इसलिये धन के महत्त्व को तो सभी स्वीकारते हैं। पर लक्ष्मी जाये किसके पास? लक्ष्मी दो प्रकार के लोगों के पास रहती है। एक है लक्ष्मी के वाहन उल्लू और दूसरे लक्ष्मी के स्वामी नारायण। लक्ष्मी तो हमें मिल सकती है पर उसका स्वीकार हमें उल्लू रूप में करना है या नारायण रूप में यह हमारा निर्णय होता है। उल्लू लक्ष्मी का दास है; नारायण लक्ष्मी के स्वामी हैं। लक्ष्मी उल्लू की गर्दन पर बैठती है; नारायण के चरणों के पास। तो हमें यह देखना है कि हम संपत्ति के स्वामी बनते हैं या संपत्ति ही हमारी स्वामिनी बन जाती है। साधारणतया तो यही दिखलाई पड़ता है कि अधिकांश धनवान धन के दास ही होते हैं, स्वामी नहीं। लक्ष्मी को चंचला कहा गया है। उल्लूओं की गर्दन पर बैठ कर विहार करने वाली लक्ष्मी तो चंचला होगी ही। वह स्थिर तो केवल नारायण के चरणों में ही है। इसलिये यदि सच्चे अर्थों में धनवान होना है तो हमें लक्ष्मी को वश में रखना होगा; उसके वशीभूत होने से सावधानीपूर्वक बचना होगा।

हम सभी दीपावली के दिन लक्ष्मी जी का पूजन करते हैं। परन्तु ध्यान देने की बात है कि पूजन केवल लक्ष्मी जी का ही नहीं किया जाता। उनके साथ गणेश जी का भी पूजन किया जाता है। गणेश विवेक के देवता हैं। हमें लक्ष्मी जी की कृपा

से धन, संपत्ति, ऐश्वर्य तो चाहिये पर साथ ही साथ गणेश कृपा भी आवश्यक है। धन सदैव सन्मार्ग से प्राप्त हो तभी सुखकर है, श्रेयस्कर है। बेर्इमानी से, चोरी से, धोखाधड़ी से प्राप्त धन अगर आ भी गया तो लक्ष्मी जी की कृपा तो हो गयी पर गणेश जी की नहीं हुई। ऐसी अवस्था में यह निश्चित है कि वह धन केवल दुःखद ही होगा। भले ही प्रारम्भ में वह सुखकर लगे पर उसका फल विषाक्त ही होना है। कुपथ्य भोजन भी खाते समय भले ही स्वादिष्ट मालूम हो पर परिणामतः अस्वास्थ्यकर ही सिद्ध होता है। ईमानदारी से कमाया धन ही शाश्वत प्रसन्नता दे सकता है। गणेश पूजा का एक महत्त्व और भी है। विवेक हमें धन के सदुपयोग की समझ देता है। धन की तीन गतियाँ बतायी जाती हैं— दान भोग और नाश। भर्तृहरि ने कहा है :

**दानं भोगो नाशस्तिसो गतयः भवन्ति  
वित्तस्य**

**यो न ददाति न भुक्ते तस्य तृतीया  
गतिर्भवति॥**

**नीतिशतकम् ४३**

**अर्थात्**

**धन की तीन दशायें होती हैं दान भोग  
या नाश।**

**नहीं दिया या भोगा होनी है तीसरी  
जानो॥**

( समवृत्त अनुवाद )

हमारे मनीषियों ने दान को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना है। पुराणों में कथा आती है कि एक बार देवता, दानव और मनुष्य तीनों ब्रह्माजी के पास गये और उनसे अपने कल्याण का उपाय पूछा। ब्रह्मा जी ने केवल एक अक्षर बताया 'द'। इस द का क्या अर्थ है? ऋषियों ने इसकी व्याख्या की और कहा कि देवताओं के लिये इसका अर्थ है 'दम'। देव लोक भोग लोक है। उपभोग ही वहाँ की रीति है। अतः उनके कल्याण के लिये अपनी इच्छाओं का दमन ही आवश्यक है। दानवों के लिये द का अर्थ है 'दया'। क्रूरता उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है जिसके कारण वे सदैव अत्याचार के लिये ही तत्पर रहते हैं। अतः उनका कल्याण दया में ही निहित है। मानवों के लिये द का अर्थ है दान। मनुष्य में ममत्व या ममता का गुण स्वाभाविक होता है। मेरा घर, मेरा परिवार, मेरी संपत्ति, मेरा पद आदि का मन पर सदैव अधिकार होता है। यह ममत्व और उससे जुड़ा अहंकार मनुष्य के लिये अत्यन्त दुःख का कारण बन जाता है। दान अर्थात् ममता या अहं का त्याग। लेकिन विडम्बना देखिये कि लोग दान देते हैं तो भी यह इच्छा करते हैं कि उन्हें दानी के रूप में जाना जाय। अर्थात् धन का दान तो किया पर कीर्ति का लोभ बढ़ गया। यह वास्तविक दान नहीं। जब हम यज्ञ करते हैं और अग्नि में आहुति देते हैं तो कहते हैं स्वाहा। इसका तात्पर्य है कि यह वस्तु अग्नि को और उसके माध्यम से देवताओं को अर्पण। पर स्वाहा कहने के बाद तुरत कहा जाता है 'इदं न मम' अर्थात् यह मेरा नहीं है। इस प्रकार वस्तु दान दी और साथ ही साथ उसके प्रति

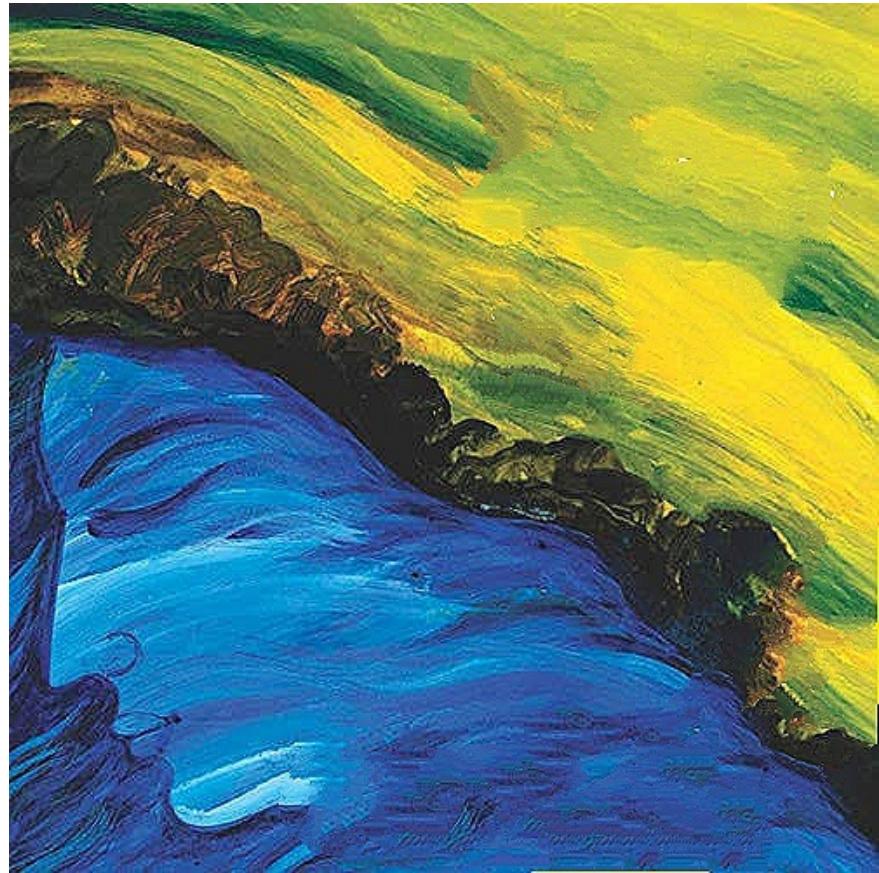
ममता भी त्याग दी। तात्पर्य यह है कि धन कमाओ, उपभोग भी करो पर साथ ही अहंकार से बचो, ममता त्यागो, देने की प्रवृत्ति रखो, दूसरों के कल्याण के लिये धन का उपयोग करो यही मानव के लिये श्रेयस्कर मार्ग है।

स्थिर लक्ष्मी कहाँ रहती है इस सम्बन्ध में महाभारत के शांतिपर्व में एक कथा आती है जिसमें बताया गया है कि लक्ष्मी पहले दैत्यों के यहाँ थी पर बाद में उन्हें छोड़ कर वह देवताओं के पास चली आयी। देवताओं ने जब उनसे इसका कारण पूछा तो लक्ष्मी ने बताया कि जहाँ सत्य, दान, तप, पवित्रता, करुणा और मित्र के प्रति प्रेम होता है वहाँ मैं निवास करती हूँ। जहाँ अध्ययन, यज्ञ, अपने से बड़े, गुरु तथा अतिथि का पूजन, अनाथ, दुर्बलों तथा अपने पर आश्रितों का संरक्षण होता है वे स्थान मुझे प्रिय हैं। निद्रा, आलस्य, अप्रसन्नता, दोषदृष्टि, अविवेक, अप्रीति, विषाद तथा बुरी इच्छाएँ जहाँ हों वहाँ से मैं शीघ्र निकल जाती हूँ। दैत्यों के पास जब तक गुण थे तब तक मैं वहाँ रही। पर अब उन्होंने उन गुणों का त्याग कर दिया है और उनमें दोष आ गये हैं इसलिये मैंने उन्हें छोड़ दिया है और तुम्हारे पास आ गयी हूँ। परन्तु सावधान। दोषों से बचे रहो। नहीं तो तुम्हारा भी वही परिणाम होगा।

तात्पर्य यह है कि हम सभी को सदैव अत्यन्त सावधानतापूर्वक अपने पर अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि के साथ नज़र रखनी चाहिये। दोषों से बचें, गुणों का विकास करें और तब कहें, 'तामिहोपह्येश्चियम्'।



# असीम कृत मुखर नवगीत 'रचो नदी का मौन'



डॉ अवधेश कुमार अवध  
मेधालय

'मेरे लिए जननि

मत कुछ कर  
केवल एक अनुग्रह कर दे।  
आखर-आखर मैं सागर को  
रहने को घर दे।'

माँ वीणा पाणि ने गीतकार की स्तुति को सुन लिया तभी तो 'रचो नदी का मौन' आखर-आखर मैं सागर का अधिगास बन सका। डॉ. शश्मुनाथ सिंह, डॉ. ठाकुर प्रसाद, डॉ. शिवबहादुर भद्रारिया, श्रद्धेय वीरेन्द्र मिश्र की नवगीत श्रृंखला में 'रचो नदी का मौन' विरचित कर श्रीयुत असीम शुक्ल जी एक कनक-

कड़ी बन गए।

हिंदी साहित्य के इतिहास में समयानुसार विधाओं का उद्दव, उत्थान एवं पतन होता रहा है। साहित्य के आदिकालीन कक्षरे में हर विधा का आमत्य बीज गिद्यमान था। आवश्यकताजनित कवि के आह्वान पर वही अक्षय बीज विशाल वृक्ष बनकर 'वाद' के रूप में परम्परागत धारा को मोड़ने वाला विशाल द्वीप बन जाता है या सुमेरु शैल बनकर पवन की राह धुमा देता है। हाँ, जैसा कि शाश्वत सत्य है, उत्थान-पतन, सृजन - संहार, जीवन-मरण, वसंत-पतझड़ की सरल-परुष राहों से

गुजरना ही पड़ता है। छः दशकों से नवगीत भी वक्त के थपेड़ों से दो चार होते हुए सतत अप्रगामी है, स्फूर्त है, और इसके साथ ही निरंतर लेखनी द्वारा साधना रत हैं बुर्ज गीतकार आ. असीम शुक्ल जी।

श्रद्धेय केदारनाथ अग्रवाल की उर्वर साहित्यिक वसुधा बांदा, उत्तर प्रदेश में जब देश आजादी की दुल्हन को पाने हेतु गाजे-बाजे के साथ ब्रितानी हुकूमत की नींद उड़ाए हुए था उसी समय असीम जी का जन्म हुआ। हिंदी विषय से उच्च शिक्षा ग्रहणोपरांत पत्रकारिता और साहित्य के मुहाने पर दोनों का रसास्वादन करते हुए उभय पक्ष में कर्मरत रहे। विविध साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मान प्राप्त होता रहा लेकिन अधोमुखी विकृत वक्त से समझौता किए बिना विशुद्ध और स्तरीय साहित्य सृजन में संलग्न रहे। घुटनों तक रोशनी, कल्पवृक्ष गमले में, समय की सीप से, शब्द एक कस्तूरी मृग, दीवार पर टंगे प्रश्न, मुक्ति में कविता, रथचक्र, व्यक्ति और विचार, मूल्यों के सार्थगाह और सृजन आदि साहित्यिक कृतियाँ आज समय के पटल पर गहरे हस्ताक्षर अंकित कर रही हैं। बड़े बड़े प्रिंट मीडिया हाउस रूपी काजल की कोठरी से बेदाग बाहर निकलने में भी पूर्णतः सफल रहे।

'रचो नदी का मौन' मुख्यतया नवगीत संग्रह है किंतु अतुकांत कविता, दोहे, मुक्तक और गज़ल द्वारा पकवान में सलाद, चटनी और राइता की भूमिका निभायी गई है। दूसरे शब्दों में कहें तो मुख्य विधा नवगीत में अन्य विधाओं की छाँक लगाई गई है। संस्कृत के तत्सम शब्दों की बहुलता संग तद्दत्त और देशज

से भी परहेज नहीं है बशर्ते लोकप्रिय हों। नवगीत विधा दरअसल गीत में नयी सोच, नये बिम्ब, नये प्रतीक और नये दृष्टिकोण की स्थापना से सम्बन्धित है। भाव विपर्यय में आबद्ध 'दर्पण लगता है' की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

'है तो हाथ-पाँव वाला, पर  
कभी-कभी दर्पण लगता है।'

'वह अरूप पर रूपवान है,  
समय बना वह ब्रण भरता है।'

पर्यावरण विकृति से व्याकुल नदी बोल उठती है 'किससे व्यथा कहुँ' और संवेदनाओं के गिरने का ऐसा कुप्रभाव पड़ा कि 'शब्द में है अर्थ की विपरीत धारा' ही नहीं बल्कि 'लिए हँसिया फसल को, काटने तुम आ गए' कहना पड़ा गीतकार को। श्रम ही सफलता की कुंजी है इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है। गीतकार की धारणा है कि किसी का मूल अवश्य संरक्षित किया जाए। 'पानी में पानीपन रहने दो' तथा 'पानी को यदि जीवन कहना है/पत्थर का यह घर्षण सहने दो' आत्ममुग्धता में विवेक पर मोह का आवरण पड़ जाता है। गगन को धिक्कारते हुए गीतकार कहता है, 'स्वाद न पूछो तुम आँसू का/अपने में हो गए मगन से।' नव सृजन हवन है शीर्षक गीत में त्याग की पराकाष्ठा परिलक्षित है-

'वंशी बांसों की/ वंशज है/ छेदों को जीती है/ तन में/ मधुवर्णी स्वर/ घोल घोल कर/ सुख-सागर भर देती/ मन में।'

नदी की रवानी का जीवन की निरंतरता के साथ सम्य है। बढ़ते प्राकृतिक शोषण और पर्यावरणीय विकृति ने बहुधा जीवन को बाधित किया है। नदी का मौन होना हमारे जीवन हेतु विराम का घोतक है। कदाचित इसी संदर्भ में गीतकार ने 'रचो नदी का मौन' शीर्षक रखा है। एक साहसी और प्रबुद्ध साहित्यकार भला कैसे चुप रह सकता है, कैसे अनदेखा कर सकता है मानव जनित कुकृत्यों के प्रतिफल को! आवाज उठाने, चिल्लाने और समझाने का दायित्व लेकर ही तो माँ शारदे की आङ्गा से लेखनी उठाया है। आ. असीम जी शीर्षक रखने और आद्यांत उसको पुष्ट करने में सफल हुए हैं।

यद्यपि कई विधाओं की उपस्थिति से रचनाकार की बौद्धिक समृद्धि का परिचय मिलता है तथापि नवगीत का उन विधाओं में भी हस्तक्षेप आहत करता है। दोहों की रचना में यदा-कदा प्रथम और तृतीय चरण में विधान बाधित है। नवगीत के क्षीप्र प्रवाह में दोहा रूपी द्वीप अत्यत्य क्षति ग्रस्त हुआ है। बेहतर होता कि 'रचो नदी का मौन' विशुद्ध नवगीत संग्रह ही रहता। इसके बावजूद भी पुस्तक के समग्र बाह्यांतरिक आकर्षण में चारु चाँद अंकित है। विनसर पब्लिशिंग कम्पनी देहरादून से 2020 में प्रकाशित मात्र 150 रुपये में मिलने वाली यह सजिल्ड पुस्तक अप्रतिम एवं अनमोल है। हमारा अटल विश्वास है कि 'रचो नदी का मौन' प्रबुद्ध पाठकों/गायकों को आत्मीय संतुष्टि प्रदान करेगा। ■ ■

# दिवाली मने



## दिवाली मने



शिव मोहन सिंह  
(उप संपादक), देहरादून

फूल लड्डियों से घर को सजाए हुए,  
द्वार पर अल्पना भी बनाए हुए ,  
एक सौगात दिल में संजोए सभी,  
तार मन के जुड़ें तो दिवाली मने।

प्रेम का एक दीपक जलाएंगे हम,

भाव से सरजमीं जगमगाएंगे हम,  
नफ़रतों के अंधेरे तो मिट जाएंगे,  
तार मन के जुड़ें तो दिवाली बने।

गम नहीं गर मुझे कोई छल जाएगा,  
नेह की लौ लगी दीप जल जाएगा,  
अब उजालों के हक में हुए हैं सभी,  
तार मन के जुड़ें तो दिवाली बने।

## दिवाली का उत्सव

चलो एक दीपक वहाँ भी जलाएँ।  
दिवाली का उत्सव वे भी मनाएँ।।

महल के बगल एक बस्ती घनी है।  
तिमिर में जहाँ जुगनुओं की ठनी है।  
चलो ज्ञान दीपक वहाँ भी जलाएँ।  
दिवाली का उत्सव वे भी मनाएँ।।

कहीं पर नहीं हैं अभी कुछ निवाले।  
अकेले खड़े कुछ समय के हवाले।।

चलो उनके हिस्से उनको दिलाएँ।  
दिवाली का उत्सव वे भी मनाएँ।।

कहाँ को कहाँ सब चले जा रहे हैं।  
अँधेरे में चलकर छले जा रहे हैं।।

चलो चेतना का दीपक जलाएँ।  
दिवाली का उत्सव वे भी मनाएँ।।

अभी कुछ अँधेरे के हक में खड़े हैं।  
उजाले विवश आज शक में पड़े हैं।  
लगे जाले भ्रम के मिलकर हटाएँ।  
दिवाली का उत्सव वे भी मनाएँ।।

अभी तक नहीं जगमगाया किसी ने।  
हवा में कहाँ घर सजाया किसी ने।  
हवा तेज है दीप उनका बचाएँ।  
दिवाली का उत्सव वे भी मनाएँ।।

कहीं पर सियासत के धेरे पड़े हैं।  
कई रूप में कुछ लुटेरे खड़े हैं।  
किसी जिंदगी को चलो हम बचाएँ।  
दिवाली का उत्सव वे भी मनाएँ।।

# प्रकृति और हम

ईश्वर ने संसार बनाया  
प्रकृति से फिर उस सजाया  
दूर पहाड़ों पर उड़ते बादल  
काली घटाओ ने लगाया काजल

तरह तरह के पुष्प खिलाये  
वो सतरंगी धनुष बनाये  
आओ प्रकृति से प्रेम करे  
होने ना दे आंखों से ओझल

इंसान को प्रकृति के संग चलना होगा  
पेड़, पौधों और पुष्पों को बचाना होगा  
आक्सीजन प्लांट लगाकर के  
प्रकृति का लेवे हम संबल

पर्यावरण को किया है हमने  
कुछ करा है इस प्रकार दूषित  
चैन नहीं अब धरती मां को

प्रकृति की सांसे हो गई बोझिल

काटे हमने पेड़ सभी है आज  
व्यथित धरा और अम्बर है  
कैसे जी पायेगी नई पीढ़ी  
नहीं चेते सांसे होगी कम तिल तिल

फूलों सा जीवन गर इंसान भी  
बनाकर ,खिला कर चले तो  
गुलाबों की महकती खुशबू से  
पुष्पों और इंसान का रिश्ता जाये खिल

ले संकल्प सभी आज अभी से  
आलम्बन लेकर किसी तरह का  
जन्मदिन हो या हो पुण्य तिथि  
एक पेड़ लगाये हम हर साल



सविता जैन  
सहारनपुर

# शहर की छोटी सी छत पर



बचपन में खेला करते थे गाँव  
गाँव  
बन जाता था कोई भी कप्तान  
बॉट देता था काम  
लड़कियाँ घरकुल बनातीं  
लड़के पिस्तौल से डराते दुश्मन  
को  
तब कोई नहीं चाहता था बनना  
बच्चा  
बन जाता था  
मम्मी- पापा  
पनवारी, धोबी, मोची,  
दुकानदार, ग्राहक, नौकर,  
स्कूल टीचर या हेडमास्टर  
शहर की एक छोटी सी छत पर  
बस जाता था पूरा गाँव  
जो आज चमार बनता  
अगले दिन वो मास्टर बन जाता  
चपरासी हो जाता पोस्टमैन  
दुकानदार  
बदल जाता ग्राहक में

दूसरे दिन  
कोई और ही होता कप्तान  
लड़कियाँ फिर संभालती घरकुल  
लड़के पिस्तौल  
रोज खेल होने पर  
कर लेते चट्टा-मट्टा  
खेलते दूसरा नया खेल  
सितौलिया  
छिपाइ  
विष अमृत  
नदी पहाड़  
या फिर वहीं गाँव गाँव

आज हम बड़े हो गए हैं  
मिल गया है लाइसेंस पिस्तौल का  
वह मोची ही लगता है  
मंटू नहीं  
पान की दुकान पर  
दूसरी सहेलियों की तरह  
मैं भी नहीं जाती



स्वरांगी साने  
पुणे

जबकि बैठता है वहाँ संजू ही  
अब रोज़-रोज़  
नहीं बदलता चित्र  
रघु के डाक देने आने पर  
नहीं पूछते  
मामाजी की चिट्ठी आई

डरने लगे हैं कप्तान से  
हर दिन नहीं बदलता अब कप्तान  
टोनू, पिंकी, रीनी, मिली  
राजू, पप्पू, बबलू  
बड़ी बड़ी नेम प्लेटों पर  
प्रतिष्ठा पा रहे हैं

शहर में रहते हम  
खेला करते थे गाँव गाँव  
हम एक और बार  
खेलना चाहते हैं  
और अब बनना चाहते हैं बच्चा।

## दीपावली

दीपावली पर्व पर बच्चों को उपहार

देना और कुछ धनराशि देना हमारी पुरानी परम्परा है क्योंकि जिस घर के बच्चों के चेहरे पर मुस्कान होगी, माँ लक्ष्मी उन पर जरूरी कृपा दृष्टि देंगी।

कोई भी माँ हो अपने बच्चों को खुश देखना चाहती है। तो उस के लिए झूठ की आवश्यकता नहीं, बच्चों के भगवान तो माँ पिता ही होते हैं और माँ लक्ष्मी बच्चों के भाग्य की धनराशि जरूर देती है तो अपने बच्चों को अपनी सभ्यता का स्वरूप और कारण जरूर बताये। उन्हें अवगत कराये की किस प्रथा के पीछे कारण क्या है।

दीपावली को राम चन्द्र जी अयोध्या लौटे थे और अयोध्या वासियों ने उनके स्वागत में दीप जलाये थे ये बात तो सब को पता है।

पर उस से भी पहले जब देवता और असुरों द्वारा समुद्र मंथन हुआ था तो धन तेरस के दिन धन्वन्तरि देव हाथ में अप्रत कलश ले कर समुद्र से प्रगट हुए थे।

धन्वन्तरि देव भगवान विष्णु के अवतार हैं और पहले आयुर्वेद के देव थे, यानी कि सनातन धर्म में त्रेता युग से आयुर्वेद का अनुसरण किया जाता है।

इस मंथन से में समुद्र से माँ लक्ष्मी भी निकली थी जिन्होंने भगवान विष्णु को

वरण किया था।

जो कि यह बताता है कि सनातन काल मे स्त्रियाँ अपनी इच्छा से अपने लिए वर को चुनती थीं और सभी उस का सम्मान भी करते थे।

इसलिये माँ लक्ष्मी द्वारा विष्णु को पति रूप में वरण करने पर देवता और असुर किसी ने भी इस का विरोध नहीं किया और हम आज भी दीपावली के पर्व पर श्री विष्णु और माँ श्री लक्ष्मी दोनों का पूजन करते हैं और कामना करते हैं कि हमें स्वास्थ्य और सम्पत्ति दोनों ही प्राप्त हो। जिस प्रकार पति के बिना पत्नी का किसी के घर मे निवास करना सम्भव नहीं, उसी प्रकार पति श्री विष्णु के बिना लक्ष्मी माँ नहीं आती। तो बच्चों को ये सब कथायें सुनाये और उन का ज्ञान वर्धन करें।

पहले के जमाने में ये सब शिक्षा गुरुकुलों में दी जाती थी। हमारे ग्रन्थों में आज भी इन कथाओं का वर्णन मिलता है। पर आज जहाँ बच्चों के लिए गुरुकुल हैं ना ही आज की शिक्षा में सनातन धर्म के ग्रन्थों का कोई भी स्थान नहीं। तो ऐसे में बच्चे किस से ये ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे।

उन के पास आधुनिक विज्ञान से समय ही नहीं मिलता इस ज्ञान को जानने के लिए। बिन सत्संग विवेक न होइ।

आज सत्संग मे जाने का समय किस के पास है और दूसरी की आज के सत्संग ने भी आधुनिकता का रूप ले लिया है। सूक्ष्मता और आकर्षक ने सत्य से सब को दूर कर दिया है।

मेहनत कर के मेहनताना देना तो एक बाल अपराध है जो कानून अपराध भी है, तो उन को साथ मे हाथ बटाना जरूर सिखाये पर स्वार्थ या लालच से नहीं बल्कि किसी की भी सहायता करने के उद्देश्य से। रही बात सेंटा को भूलने की तो भाई बच्चे वो सीखते हैं जो आप उन्हें सिखाते हैं।

हम ना तो क्रिसमस मनाते हैं न हमारे बच्चे किसी सेंटा का इंतजार करते हैं। अपने धर्म को जरूर बढ़ाये और बच्चों को उन की भाषा मे ही समझाये।

इस दीपावली को दीपावली का महत्व समझाये और अपनी संस्कृति को बचाये।

**माँ लक्ष्मी तो जगत माता है।**

**माँ सब को ऐश्वर्य और सम्पन्नता दें।**

**सब के दुख दूर करें।**

**अपनी प्रार्थना में सभी के लिए खुशियाँ माँगे।**

**गासुदेव क्रुतुम्बकम्**

**जय माँ लक्ष्मी**

**संध्या चतुर्वदी  
मथुरा, उप**

# एक प्रेमकहानी



## एक प्रेमकहानी

कस्तूरी  
एक हिरण और एक है  
कस्तूरी .....  
दरस के जिसको है  
तरसता  
नादान मृग दूर उसको  
समझता  
भटकता फिरता वो  
वन वन  
रहता बावरा उसका मन  
फिर भी तालाश उसकी  
है अधूरी  
एक हिरण और एक है  
कस्तूरी .....



अनुपम मिठास  
टोरंटो, कनाडा

एक हिरण और एक है  
कस्तूरी  
अजीब दोनों की है  
दास्ताँ  
हो के पूरी भी नहीं हुई  
पूरी  
दोनों इक दूजे में समाए  
बनके चलते ये  
हमसाये  
फिर भी दोनों में है दूरी  
ताउम्र जो रहे ढूँढता  
बसी उसी में है

ऐसा ही होता है बावरा  
 यह मन  
 बेचैन होके छूँठे हैं  
 आसरा यह मन  
 चैन दुनिया में रहे  
 छूँढ़ता  
 जगह जगह पता है  
 पूछता  
 नहीं जानता चैन ही है  
 कस्तूरी  
 मृग से मन की यही है  
 मजबूरी  
 एक हिरण और एक है  
 कस्तूरी .....



## यही पे कहीं

यहीं पे कहीं था  
 एक छोटा सा  
 गाँव ।  
 पीपल के पेड़ की  
 बड़ी घनी थी  
 छांव ।  
 जो खड़ा हुआ  
 कभी  
 नदिया के तीर  
 था।  
 उसकी घनी  
 शाखों में  
 बसाया  
 आशियाना था ।

पंख हूँ फड़फड़ता, इंसानों के जंगल में।  ना अपना घर छूँट पाता बंजर हुए मंज़र में ।  सूखा नदिया का नीर नैन भरते हैं नीर ।  दिल में लिए मैं पीर है मन बहुत ही अधीर ।	नाम तो है इंसान काम हैं वाहिशयाना ।  मिटा रहा मेरे जो निशाँ , बचा ना पायोगे अपने निशाँ ।'  यही पे कहीं कभी , मेरा छोटा सा घर था ।
---	--

■ ■

# आंसू



अरुण कुमार मेनारिया 'सागर'  
राजस्थान

नयनों से निकल कर हमारे,गालों पर टपकते हैं आंसू  
जैसे किसी गुलाब पर,चन्द ओस की बूंदें होते हैं आंसू  
कभी गम के,तो कभी खुशी के होते हैं, हमारे ये आंसू  
कभी जुदाई, तो कभी मिलन के होते हैं हमारे ये आंसू  
देखकर कभी आंसूओं को पिघलते हैं हम,पत्थर भी  
तो रोककर कभी आंसूओं को बनते हैं हम ,पत्थर भी  
आंसूओं की दुनिया भी, मेरे दोस्तों, है बड़ी न्यारी  
कभी लगती है, बहुत बुरी,तो कभी लगती है, प्यारी  
कभी अतीत के दुखी दिनों को याद कराते हैं ये आंसू  
तो कभी खुशियों के बहाने ही निकल आते हैं ये आंसू  
लेकिन दोस्तों कितनी अजीब चीज होते हैं, ये आंसू भी  
कभी कभी बिना कहे ही बहुत कुछ कहते,ये आंसू भी।



# बचपन



## बचपन

क्या रोशनी थी ये मादक जीवन  
की  
सपने सजा दी आत्मा और मन  
की  
प्रयास अपनी थी दिगंत गगन में  
रास्ता एक ही थी आगे चलने की

माँ की ममता बाप एक फरिश्ता  
खुशियाँ भर देती थी  
दोनों की प्यार और मधुरता  
एक सूर्य था एक किरण थी

एक फूल एक सुगंध थी  
महकती हुई सुगंध  
ज़िन्दगी की किरण में  
रोशनी की उजाला भर देती है  
चल मचल ये उलझन में।

## गाँव का मन्दिर

बहुत खास है उस पल की  
तकदीर  
गाँव में मेरे बचपन की तस्वीर  
कल मिट्ठी थी आज सोना है  
जमाना बदल गया फिर भी



कृति प्रिया मिश्रा  
पुरी, (ओडिशा)

अपना है।

ये मेरी आत्मा और परमात्मा  
गाँव के आँगन की ये प्रतिमा  
जहाँ हूँ कल की देवात्मा  
कभी भूली ना अब भूलूँगी  
माँ तेरी मिट्ठी में घुल जाऊँगी  
आज की बहती धारा में  
जै जै गान सुनाऊँगी।

एक नज़र तेरी  
मुस्कान में खुशबू भरी  
मन की पंखुड़ियों में

खुशियों की बिजली गिरी  
खिलखिलाती बदन में  
रोशनी भरी मुखड़े में  
चंचल बहकती स्निग्ध की तृप्ति  
आँचल फिरा के मन की भक्ति  
तेरे मन की मिलन  
मेरे तन का स्पन्दन  
मेरी अदाओं में भरती एक नयी  
किरण  
प्रेम में भक्ति  
फिर भक्ति में शक्ति  
धरती की संरचना में  
मैं तो भक्ति से आलोकित

यह हवा का स्पर्श  
मोहित कर दी जीवन के ये  
आदर्श  
तरंग के गगन में  
प्रेम की ये पुष्पक  
जय जय हुई मेरी आत्मा की  
स्मारक  
राम तेरे भव भारी  
पवित्रता में लगन लगी  
जय राम जय राम आत्मा में  
मेरी।



## 'यशोधरा'



मंजु श्रीवास्तव 'मन'  
वर्जनिया, अमेरिका

हे सिद्धार्थ !यह कैसा वैराग्य ?  
निकल पड़े तुम क्रांतिवीर बन, शांति जगत में लाने को !  
मुक्त हुये तुम हर बंधन से, परम मोक्ष को पाने को !  
मां की ममता ना बाँध सकी, ना पिता का आग्रह रोक सका !  
मम अंतस पीड़ा क्या बाँधे, पुत्र मोह ना बाँध सका !  
हे प्रियवर, जाओ तुमको मुक्त किया!  
तुम जाओ अपने उस पथ पर, जो तुमने अपने लिए चुना !  
मेरी पीड़ा समझो ना समझो, पर मैं स्त्री हूँ।  
जो मैं ना समझूँ मर्म तुम्हारा, और तुम्हारी पीड़ा,  
तो ईश्वर भी अपमानित हो, जिसने स्त्री हृदय गढ़ा!  
वृद्धावस्था और मृत्यु ने किया तुम्हें कितना व्याकुल,  
रुणावस्था और गरीबी कर देती तुमको आकुल !  
सप्त पदी में रवन दिया था, साथ तुम्हारे चलने का !  
कर ना सकी अनुगमन अगर, हक नहीं तुम्हें विमुख करने का !  
मेरा अंतस भी रोता है, देख तुम्हारी व्याकुलता !  
जाओ प्रियवर, ना रोकूँगी, कर रही प्रतीक्षा मानवता !  
अभिशप्त शिला सी अडिग यहाँ, मैं राह तकूँगी उस पल की,  
जब लक्ष्य साधकर तुम अपना, खुद लौटोगे डेहरी घर की!!

# हिन्दूत्व हमारी पहचान



धीरज कुमार शुक्ला 'दर्श'  
झालावाड़, राजस्थान

हम हिन्दू हिन्दूत्व हमारी पहचान  
सौंसों में हमारी बसता हिंदुस्तान  
हम सहिष्णु देवों की संतान  
सहिष्णुता ही हमारी इक पहचान  
करते धर्म का स्थापन  
नहीं करते हम विस्थापन  
करते हैं हम सब धर्मों का सम्मान  
हम हिन्दू हिन्दूत्व हमारी पहचान  
हमारा ध्येय यही हो जग कल्याण  
ना हो कभी मानव का अवसान  
वेदों से मिलता हमें सच्चा ज्ञान

गीता भी कहते यहाँ कृष्ण भगवान  
भक्तों को देते भक्ति का वरदान  
भारत हमारी माता हम इसकी संतान  
हम हिन्दू हिन्दूत्व हमारी पहचान



# पूर्ति



मालती ,देख तो रघु को ...उसकी  
चमड़ी कैसी रुखी- रुखी लग रही है,अब  
ठंडी हवा चल रही है जो शरीर की नमी  
खींच लेगी...इसलिए चिकनाई जरुरी है  
।

शरीर पर तेल लगा दिया करो...  
मालती को मालकिन रमा के कहे  
शब्द से होश आया था ....रघु का शरीर  
सच में सूखा सा था।

महानगर की हर चीज इतनी  
भगाती है कि दौड़ कर भी पकड़ पाना  
संभव नहीं।

और फिर हम दो माँ -बेटे का  
तीसरा सहारा भी तो कोई नहीं।

अब रमा को कैसे समझाए कि दिनों  
-दिन आसमान छूती कीमतों में तेल  
लगाया जाय या खाया जाय, इतनी ही तो  
ला पाती है कि दो वक्त की सज्जी और  
छैंक लग पाए।

तेल का रोना हम दोनों ही रोते  
है..भले आपकी तेल और हमारी तेल की  
जरुरतें अलग -अलग हैं।

वो तो भला हो कि इस दीपावली में  
लोगों ने जो दिए घर के नजदीक गाले  
पीपल के पेड़ के नीचे जलाए थे ...सुबह  
तड़के उन सभी से तेल निकाल लाई थी।

करीब हफ्तेभर तो चल ही जाएगा।



सपना चन्द्रा  
भागलपुर बिहार

# पिता



राहुल यादव  
चन्दौली, उत्तर प्रदेश

पिता जमीर है पिता जागीर है  
जिनके पास पिता है वो सबसे अमीर है  
खाहिशें पूरी करने में पिता नदी का नीर है  
धर्म कि नजरों में , बच्चों के लिए पिता पीर है ॥॥॥

बाहर से सख्त , अंदर से है नर्म  
दिल में दफन है उनके ना जाने कितना मर्म  
हम दर्द-ए-दिल जिनसे ना कुछ कह पाते  
वो हमारी खामोशी में, हमारा चेहरा पढ़ जाते ॥॥॥

ऊँगली पकड़कर जिसने चलना सिखाया  
हर मुश्किल के वक्त हमने उनका साया पाया  
जब जिन्दगी कि राहों में हमारे कदम डगमगाते  
उनके तजुर्वे हमारे हौँसले बढ़ाते ॥॥॥

इल्म और नसीहत का नूर ही दिखलाते  
जिन्दगी कि अहमियत वो हमेशा समझाते  
पैसों की कीमत, सिलवाकर टूटी चप्पल बतलाते  
खुद की जरूरतें समेट कर हमारे कांठों को हटाते  
हो भविष्य उज्ज्वल यही दुआ है वो फरमाते  
प्यार और आशीर्वाद देते-देते  
एक दिन! वो चले जाते ॥॥



# जरूरी है....



सुमन अग्रवाल 'सागरिका'  
आगरा

रुठे हुए दिल को मनाना भी जरूरी है।  
दिल से दोस्ती निभाना भी जरूरी है।

यूँ तो जिंदगी में गम, निराशा, आसूँ बहुत,  
नम औँखों का दर्द छुपाना भी जरूरी है।

वैसे तकलीफ, दुख-दर्द तो है बहुत लेकिन,  
खुश रहने को हँसना-हँसाना भी जरूरी है।

बेसबब दिल पर कोई बोझ न हो बस,  
जिंदगी में जंग को मिटाना भी जरूरी है।

तनावग्रस्त जिंदगी करें भी तो क्या करें,  
अपनों को परेशानी बताना भी जरूरी है।

कभी भी कोई अपशब्द बुल जाये तो,  
गलती पर सिर झुकाना भी जरूरी है।

मन को शांति रखने के लिए 'सुमन'  
हमें मंदिर मजारे जाना भी जरूरी है।



# भारत की शान वॉरशिप 'आईएसी विक्रांत'



समुद्र में तैरता एक एयरपोर्ट यानी की आईएसी विक्रांत जिसे 23 हजार करोड़ की लागत से बनाया गया है। विक्रांत की वजह से भारतीय नौसेना की ताकत बढ़ेगी। भारत हिंद महासागर में चीन और पाकिस्तान दोनों को टक्कर दे सकेगा। नौसेना का लक्ष्य इसे अप्रैल 2022 में प्राप्त करने का है और अगस्त 2022 में औपचारिक रूप से सेवा में शामिल करने की योजना है। सोनोवाल ने कहा, 'यह इसका दूसरा ट्रायल है। हमारा लक्ष्य इस जहाज को अगले साल अगस्त तक शामिल करने का है। कोचीन शिप्यार्ड और नौसेना के संयुक्त सहयोग से बनाए गए पहले आईएसी विक्रांत की

शुरुआत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।' इस युद्धवाहक जहाज ने अपनी पहली समुद्री यात्रा इसी साल अगस्त में सफलतापूर्वक पूरी की थी। गौरतलब है कि केंद्रीय जहाजरानी मंत्री सर्वानंद सोनोवाल और नौसेना प्रमुख एडमिरल करमबीर सिंह केरल तट के नजदीक मौजूद देश में ही विकसित विमानवाहक युद्धपोत (आईएसी) विक्रांत पर गए और उसके समुद्री परीक्षण की प्रगति की समीक्षा की। नौसेना प्रमुख एडमिरल करमबीर सिंह ने कहा कि यह गर्व का विषय है कि भारत ने इस युद्धपोत के निर्माण में 76 प्रतिशत सामग्री स्वदेशी लगाई है और इसे 20 हजार करोड़ रुपये





के बजट में तैयार किया गया है। सिंह ने लिए भी यह अहम है। इस वॉरशिप की मीटर चौड़ा है। इसकी अधिकतम स्पीड कहा, "इस परियोजना में करीब 550 खासियत यह है कि विक्रांत के आने के 52 किलोमीटर प्रति घंटा है। 14 फ्लोर के उद्योग जुड़े और करीब 13,000 लोगों ने बाद भारत उन देशों में शामिल हो गया है इस जहाज में 150 कंपार्टमेंट हैं। जिसमें सीएसएल के साथ काम किया। यही जिसके पास वॉरशिप है। चीन के पास 2 1700 नौसैनिकों को तैनात किया जा नहीं, इसने न सिर्फ हमें महत्वपूर्ण क्षमता और अमेरिका के पास सबसे ज्यादा 11 सकता है। इसमें मिग 29 के, कंमोर्ग 39 दी है बल्कि देश की औद्योगिक क्षमता के वॉरशिप हैं। ये 262 मीटर लंबा और 62 हेलीकॉप्टर के साथ-साथ 30 फाइटर जेट

को तैनात किया जा सकता है। विक्रांत में 76 प्रतिशत पाठ्स भारत में ही बने हैं। 44 हजार 500 टन वजनी इस विक्रांत में ट्रिवन पाइपलाइन इंजन लगे हैं।



# लो बी. पी से पायें निजात



आजकल की भागदौड़ भरी लाईफ स्टाइल में मानसिक तनाव और गलत खानपान की वजह से लो ल्ड प्रेशर की समस्या हो जाती है जिसे गम्भीरता सो ना लेना जानलेवा साबित हो सकता है। देखाजाये तो

आजकल बीपी की समस्या आम हो गई है फिर चाहे वो हाई ल्ड प्रेशर हो या फिर लो ल्ड प्रेशर, लोगों को लगता है कि हाई ल्ड प्रेशर लोगों के लिए खतरनाक

होता है लेकिन ऐसा नहीं है "लो ल्ड प्रेशर" भी आपको काफी हद तक परेशान कर सकता है। इसमें लोगों को कभी भी चक्कर आने लगता है और लोगों को हाथ-पैर कांपने लगते हैं साथ ही आपको घबराहट भी होती है।

## नमक का सेवन

नमक में सोडियम का पर्याप्त मात्रा होती है जो निम्न रक्तचाप को कंट्रोल करने के लिए बहुत बढ़िया है लेकिन उच्च



रक्तचाप के लिए यह नुकसानदायक है। ब्लड प्रेशर लो हो जाए तो नमक और चीनी का घोल पीने से फायदा मिलता है। इसे पीने से पहले इस बात का ध्यान रखें कि यह उपाय सिर्फ लो ब्लड प्रेशर के लिए है।

#### दूध और बादाम

दूध के साथ बादाम का सेवन करने से भी लो ब्लड प्रेशर सामान्य हो जाता है।

निम्न रक्तचाप के रोगी को इन दोनों चीजों किशमिश

का सेवन एक साथ करना चाहिए।

#### तुलसी

तुलसी कुदरती एंटीसैप्टिक गुणों से भरपूर होती है। इसमें पोटैशियम, मैग्नीशियम, विटामिन सी के अलागा और भी बहुत से जरूरी तत्व होते हैं। लो ब्लड प्रेशर है तो रोजाना सुबह 4-5 तुलसी की पत्तियों को खाली पेट चबाएं।

रात को एक मुट्ठी किशमिश को पानी में भिगो कर रख दें और इसे सुबह खाली पेट चबाकर खाएं। इससे लो ब्लड प्रेशर सामान्य रहता है।

#### कॉफी

कॉफी लो ब्लड प्रेशर को बढ़ाने का काम करती है। एक कप कॉफी पीने से बहुत फायदा मिलता है।

#### योगा

पीड़ित को योगासन करने चाहिये सुबह ताजी लंबी सांसें लेनी चाहिए और कॉमेडी फिल्म या शो देखने चाहिए और चिंता, चिंता समान है तो ज्यादा सोच विचार चिंता नहीं करनी चाहिए और इस बीमारी को हल्के में बिल्कुल ना लें।

## लो बीपी को कंट्रोल करने के घटेलू नुस्खे

# आंध्रप्रदेश की पारंपरिक मिठाई 'गवालू'



दीपावली पर आंध्रप्रदेश में यह पारंपरिक मिठाई बनती है जिसे गवालू कहते हैं। आइये! सच की दस्तक ज़ायका पेज में जानते हैं इसकी बनाने की विधि -

## महत्वपूर्ण सामग्री

- दो कप मैदा
- दो बड़ा चम्च घी
- तेल, फ्राई करने के लिए
- एक कप चीनी
- पानी जरूरत के अनुसार
- एक बड़ा चम्च बारीक कटा हुआ पिस्ता

## बनाने की विधि

- एक बॉउल में मैदा, घी, नमक और पानी डालकर अच्छी तरह मिक्स करके आटा (नॉर्मल) गूँद लें।

- गूँदे हुए आटे की 4 लोड़ियां तोड़ लें और कांटे के पीछे गाली साइड से दबाते हुए इनपर शोल्स शेप (लाइंस) बना लें।

- अब धीमी आंच में एक कड़ाही में तेल गर्म करने के लिए रखें।

- तेल गर्म होते ही शोल्स को पैन में डालें और गोल्डन ब्राउन होने तक डीप फ्राई करें।

- आंच बंद कर दें और फ्राइड शोल्स को एक प्लेट में निकाल लें।

- अब एक गहरी तली कड़ाही में चीनी और 2 पानी डालकर उबालने के





( एक तार की चाशनी बनी है या नहीं पता करने के लिए इसे उंगली और अंगूठे से चेक करके देखें, अगर तार बनती है तो चाशनी तैयार है। )

- जब चाशनी गवालू में पूरी तरह से लिपट जाए तो इन्हें प्लेट में निकाल लें।

- इन पर आपके मनपसंद ड्राइफ्रूट सजाकर सबको खिलाएं।

लिए रखें।

हो जाए तब आंच बंद कर दें और फ्राइड

- जब एक तार की चाशनी तैयार शेल्स को इसमें अच्छी तरह से ढूबो दें।



## हम तेरे होते गए

ये अदा सर्दी में आग  
लगा देती है

उगते सूरज को देखकर  
तेरा तुलसी को जल चढ़ाना  
अगरबत्ती की सुगंध से  
सारा मोहल्ले को महकाना  
ये तेरा हमदम  
जैसे गंगा नहा लेता है

वो दिसंबर की सर्दी में  
तेरा शॉल ओढ़ कर  
मंदिर आना।  
कपकपाते हाथों से  
मंदिर की घण्टियाँ बजाना।  
दुर खड़े तेरे हमनशीं के  
मन के तार को झँकूत कर जाता है

वो तेरा खिड़की पे  
शॉल ओढ़ कर ,  
आहिस्ता आहिस्ता  
चाय की चुस्कियां लेना  
दिसंबर की सर्दी को  
मई - जून में बदल देता है।  
तेरे रहनुमा पर

कभी अपनी ही  
जुल्फों से खेलना ,  
चूल्हे पे वो तेरा हाथ सेंकना,  
बार बार तेरा सर से  
पल्लू का सरकना,  
बार बार तेरा पल्लू सम्हालना  
तेरी हर एक अदा पे  
हम फिदा होते जाते हैं



कमल राठौर साहिल  
शिवपुर , मध्य प्रदेश

# फडणवीस-मलिक और इंग्स के संघरण



मुंबई इंग्स कांड में आर्यन खान को बेल मिल गई लेकिन सियासी दंगल थमा नहीं है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के नेता और महाराष्ट्र के मंत्री नवाब मलिक ने रविवार को कहा कि वह अपने दावों पर कायम हैं कि स्वापक नियंत्रण ब्यूरो (एनसीबी) के क्षेत्रीय निदेशक समीर वानखेड़े जन्म से मुस्लिम हैं और उन्होंने सरकारी नौकरी पाने के लिए फर्जी प्रमाण पत्र पेश किया था। मलिक ने पत्रकारों से कहा कि वह जाति या धर्म की लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं, बल्कि इस बात पर प्रकाश डाल रहे हैं कि कैसे “फर्जी” जाति प्रमाण पत्र पर सरकारी नौकरी प्राप्त की गई। मलिक पिछले कई दिनों से वानखेड़े को निशाना बना रहे हैं। अब नवाब मलिक

हाथों में फाइल थामे पूर्व सीएम और उनकी पत्नी के खिलाफ आरोपों की नई खेप जारी कर गए। मलिक ने कहा कि इंग्स पेडलर से पूर्व सीएम के रिश्ते हैं और वो उनके पत्नी के वीडियो का फाइनेंसर है। मलिक के आरोपों के फौरन बाद देवेंद्र फडणवीस सामने आए और कहा कि मलिक के अंडरवर्ल्ड से संबंध हैं और दिवाली के बाद वो बड़ा बम फोड़ेंगे। इसके साथ ही मलिक की दिखाई तस्वीर के बारे में बोलते हुए फडणवीस ने कहा कि वो चार साल पुरानी किसी इवेंट में ली गई थी। देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि नवाब मलिक के आरोप हास्यास्पद हैं। चार साल पहले रिवर एंथम की टीम ने फोटो खिंचवाए थे, उसे आज जारी किया जा





रहा है। चार साल पुराने तस्वीर से संबंध जोड़े जा रहे हैं। पत्नी का फोटो जानबूझकर ट्रीट किया गया। फडणवीस ने कहा कि नवाब मलिक के अंडरवर्ल्ड के साथ क्या कनेक्शन हैं मैं इसका सबूत दिवाली वेड बाद आपको(मीडिया) और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष शरद पवार को दूंगा। मैं कांच के घर में नहीं रहता, मैं ईट का जगब पथर से देना जानता हूं। नवाब मलिक ने कहा कि महाराष्ट्र में ड्रग का पूरा खेल कहीं न कहीं देवेंद्र फडणवीस के आशीर्वाद से चल रहा था और चल रहा है। जांच हो कि इस शहर में देवेंद्र जी का ड्रग के धंधे में क्या कनेक्शन है। उन्होंने

कहा कि समीर दाऊद वानखेड़े इस शहर में पिछले 14 साल में अलग-अलग विभाग में काम करता है, उसका तबादल करने के पीछे महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस हैं और उसे इसलिए लाया गया है कि पब्लिसिटी करके नाजायज़ लोगों को फंसाया जाए और ड्रग का खेल मुंबई और गोवा में चलता रहे। महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री नवाब मलिक ने दावा किया कि जयदीप राणा वही शख्स है, जिसने अमृता फडणवीस के एक म्यूजिक वीडियो के लिए फाइनेंस किया था। 'रिवर सॉन्ना' नाम से बने इस वीडियो में अमृता ने एकिटंग के साथ-साथ सोनू निगम के साथ गाना भी गाया था। अब यह चुनावी दंगल

हो या वॉलीवुड नशेड़ियों का दंगल, बर्बाद तो हिंदुस्तान का युवा ही होता है। इसलिये बुद्धजीवियों को इस ओर मंथन करने की आवश्यकता है और जबर्दस्त कठोर कानून की भी आवश्यकता है। ■ ■

# क्रिकेट का हिस्सा 'वर्क लोड मैनेजमेंट'



आईसीसी टी20 विश्व कप के बाद अब भारत और न्यूजीलैंड के बीच सीरीज की शुरुआत होने जी रही है।

उससे पहले द्रविड़ ने स्वीकार किया कि उन्हें दीर्घकालिन रणनीति बनानी होगी लेकिन फोकस टीम की जीत पर होगा। गैरतलब है कि बीसीसीआई ने द्रविड़ को 2023 वनडे विश्व कप तक भारतीय टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया। उन्होंने कहा, “अलग अलग टीमों की कोचिंग एक तरह से नहीं कर सकते। कोचिंग के कुछ सिद्धांत कभी नहीं बदलेंगे लेकिन हर टीम की चुनौतियां अलग होती

है और जरूरतें अलग होती है।” द्रविड़ ने कहा, “आप यह नहीं कह सकते हैं कि अंडर 19 स्तर पर की गई हर बात यहां भी करेंगे। मैं इस तरह से नहीं करूंगा। मेरे लिये यह सीखने और खिलाड़ियों को जानने का मौका है।” उन्होंने कहा, “सहयोगी स्टाफ के रूप में आपकी जिम्मेदारी यह है कि खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करा सकें। मैं इसी तरह से देखता हूं।” एनसीए प्रमुख के तौर पर युवा खिलाड़ियों के साथ काम कर चुके द्रविड़ ने कहा कि जूनियर स्तर पर अंतिम लक्ष्य जीत नहीं होता है लेकिन सीनियर



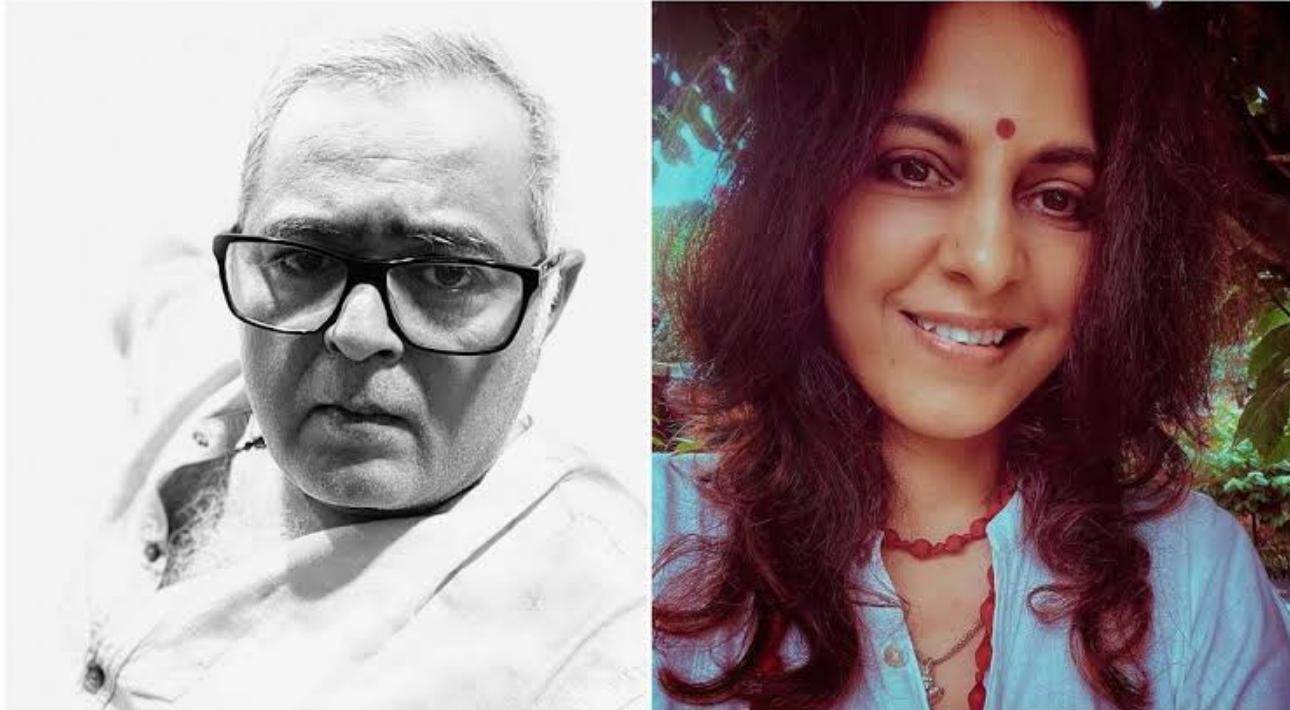
## मनोज उपाध्याय खेल सम्पादक



स्तर पर टीम से हर मैच जीतने की अपेक्षा रहा है लेकिन सभी प्रारूप खेलने वाले एक मुकाबले में सभी खिलाड़ियों की रहती है। उन्होंने कहा, "संतुलन बनाना खिलाड़ियों को उचित विश्राम दिया जायेगा। उन्होंने न्यूजीलैंड के केन विलियमसन का उदाहरण दिया जिन्हें अनदेखी भी नहीं करनी है। यह बात टेस्ट श्रृंखला के लिये तरोताजा रखने के बबल में रहने की थकान और मौजूदा मकसद से भारत के खिलाफ टी20 हालात पर भी लागू होती है। हम श्रृंखला में आराम दिया गया है। भारत के वनडे और टेस्ट कप्तान विराट कोहली को भी टी20 श्रृंखला में आराम दिया गया है। द्रविड़ ने कहा, "इतना ज्यादा क्रिकेट की अनदेखी नहीं होगी।" नये कोच ने खेल जा रहा है। खिलाड़ियों का प्रबंधन कहा कि जीतना अहम है लेकिन भविष्य के लिये मजबूत टीम तैयार करने पर भी जरूरी है। विश्व क्रिकेट में हर टीम के सामने यह चुनौती है और हमें कार्यभार प्रबंधन देखना होगा। इससे पहले भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ और टी20 कप्तान रोहित शर्मा ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया और उन्होंने कहा कि जो विराट कोहली करते आए हैं अभी तक उनकी भूमिका वैसी ही रहने वाली है। टीम के लिए वो बहुत महत्वपूर्ण खिलाड़ि हैं।

खेलते वक्त वो अपनी छाप छोड़ते हैं। हर एक मुकाबले में सभी खिलाड़ियों की भूमिका अलग-अलग होता है। जब हम पहले बल्लेबाजी करते हैं तो बल्लेबाजी की भूमिका निभानी पड़ती है, ठीक ऐसे ही गेंदबाजी में होता है। खेल के हिसाब से भूमिका हमेशा बदलती रहती है। रोहित शर्मा ने कहा कि विराट के अनुभव की वजह से टीम मजबूत होगी। जिसपर राहुल द्रविड़ ने कहा कि वर्क लोड मैनेजमेंट क्रिकेट का जरूरी हिस्सा है। हम फुटबॉल में भी देखते हैं कि जब सीजन लंबे होते हैं तो बड़े-बड़े खिलाड़ी भी हर मैच नहीं खेल पाते हैं। ऐसे में टीम के लेवल पर होता है या फिर ब्रेक देकर किया जाता है। वहीं रोहित शर्मा ने कहा कि हम कितने मैच खेलते हैं उसके पास बॉडी मानिटर करना पड़ता है। सारे खिलाड़ि मशीन नहीं हैं कि वो मैदान पर आकर बैक-टू-बैक खेलते रहे। ■ ■

# अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में पैनल चर्चा में...



फिल्म निर्माता हंसल मेहता और पटकथा लेखिका जूही चतुर्वेदी ऑनलाइन धर्मशाला अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (डीआईएफएफ) में एक पैनल चर्चा में शामिल होंगे। दोनों 'मनोरंजन क्षेत्र' में तेजी से उभरते 'ओटीटी' मंच और 'इसने कैसे स्वतंत्र रूप से फिल्में बनाने के परिदृश्य को बदला' विषय पर बात करेंगे। इस गोलमेज चर्चा का संचालन समीक्षक और पटकथा लेखक राजा सेन करेंगे।

आयोजन भी होगा। निर्वासित तिब्बती फिल्म निर्माता तेनजिन त्सेतन चोकले और नगावांग चोयफेल नयी फिल्म 'गांडेनः द जॉयफुल लैंड' पर चर्चा करेंगे। ऑस्कर में रूस का प्रवेश, डियर कॉमरेड्स, निर्देशक आंद्रेई कोनचलोव्स्की द्वारा अभिनीत, न्यूजीलैंड की द जस्टिस ऑफ बनी किंग द्वारा निर्देशक गेसोर्न थवत और पुरुतगाल की 'जैक की सवारी'

इसके अलावा, पहली बार फिल्म निर्माताओं के साथ और भारत में फिल्म वित्तपोषण पर बातचीत होगी। महोत्सव निदेशक रितु सरीन ने कहा, टीम डीआईएफएफ के विशेष प्रोग्रामिंग कार्यक्रमों की घोषणा करने के लिए रोमांचित है जो 'फिल्म निर्माताओं और



फिल्म-प्रेमियों के साथ बातचीत करेंगे।' - 'उद्योग के पेशेवरों की एक शृंखला के साथ इन गहन बातचीत में उभरते और स्थापित दोनों फिल्म निर्माताओं को महान मूल्य मिलना निश्चित है। ये सामयिक चर्चाएं क्षेत्र में सर्वोत्तम प्रथाओं, फिल्म में सामाजिक आंदोलनों, सिनेमा में आधुनिक तकनीकी विकास और बहुत कुछ का पता लगाएंगी, 'बयान पढ़ा। फेस्टिवल ने अपने लाइनअप के हिस्से के रूप में अधिक भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों की घोषणा की है, जिसमें फिल्म निर्माता मोहम्मद रसूलोफ की कोई बुराई नहीं है, बर्लिनेल 2020 में गोल्डन बियर के विजेता। इस फिल्म महोत्सव का ऑनलाइन आयोजन 4 नवंबर से 10 नवंबर के बीच होगा।

# कोविड-19



## अपने आप को अलग रखना क्या है?

अगर आप कोविड-19 के पुष्ट मामले हैं, पुष्ट मामले के नजदीकी संपर्क में हैं, कोविड-19 के लिए आपका टेस्ट हैं चुका है और परेंगाम का इंडिकेटर कर रहे हैं, या कैनोडा के बाहर यात्रा करके आए हैं, तो अपने आप को सभी से ज़बग कर लें।

अपने घर में रहें और किसी से मुलाकात ना करें। परिवार और दोस्तों को आने से मना कर दें।

दूर रहने की कोशिश करें और घर में अपने आप को अलग करते हुए अलग से सोने और बाथरूम के इस्तेमाल के प्रबंध करें।

अति आवश्यक चिकित्सा अपॉइनमेंट्स के अलावा बाकी सारी रद्द कर दें।

काम पर, स्कूल या जंतक स्थानों, जैसे की दुकानों, शोपिंग मोल, रेस्टरां, पूजा स्थानों पर ना जाएँ। अगर हो सके तो घर से ही काम करें।

सार्वजनिक परिवहन, टैक्सी, या कार पूल का इस्तेमाल ना करें। किराने के समान और अन्य ज़रूरतों के लिए डिलीवरी सेवा का इस्तेमाल करें।

दूसरों के साथ आमने-सामने संपर्क से गुरेज करें। औरौं से 2 मीटर (6 फुट) की दूरी बनाएँ रखें।

अगर आपको घर से बाहर अति आवश्यक चिकित्सा संभाल के लिए जाना पड़ता है या आप कर्मरें में किसी और के साथ हैं तो मास्क पहनें।

लगातार हाथ धोएँ और खाँसते या छींकते समय मँह ठकें। अगर हाथ नहीं धो सकते हैं तो सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें।

अपनी सहेत की लिंगरानी करें, हर रोज तापमान मारें और अधिक मात्रा में तरल पदार्थों का सेवन करें।

घर की चीजें जैसे बर्तन, कप, खाने के बर्तन, तौलिए, बिस्तरे को पानी और साबून से धोएँ, और इन्हें किसी और के साथ सांझा ना करें। बार-बार छूए जाने वाले सतहों (काउन्टर, टेबल, दरवाजों के हँडलेस, टॉइलेट, सिंक, नलके अंत्यादी) को कम से कम दिन में एक बार दुकान से खरीदे कीटाणुनाशक के साथ साफ करो।

क्या आपको कोविड-19 टेस्टिंग की आवश्यकता है? Covid19.thrive.health पर स्व-सल्याकान के जरिए पता लगाएँ जो टेस्ट के लिए आपको क्या अपने सहेत प्रदानकारी या 8-1-1 को कॉल करना है।

बिटिश कोलनिया सेंटर फॉर डिजिज कंटेल (बी सी सी डी सी) से सामान्य जानकारी के लिए, 1-888-covid-19 पर कॉल करें या 604-630-0300 पर टेक्स्ट करें या [www.bccdc.ca](http://www.bccdc.ca) पर जाएँ।



# भूल न जाना, टीकाकरण ज़रूर करवाना!

# देव-दीपावली



दीपावली का दिन था । अर्जुन ने हाथ में रखे नोटों को शीला को दिखाते हुए गिनना प्रारंभ किया । कुल पच्चीस सौ रुपए थे वे नोट ।

पांच सौ रुपये की पूजन सामग्री-पांच सौ रुपये बच्चों के पटाखे - और पांच सौ रुपये केवल मुनिया के ड्रेस के लिये। वह सबसे छोटी हैं...

और ये बाकी हजार रुपये मेरे अपने खरचे के लिये हैं-अर्जुन ने हिसाब बना दिया था।

'हजार रुपये का आप ...?'

'पांच सौ उसके लिये और यह ...पांच सौ उस उसके लिये ।'

'यह उसके ...उसके क्या है? 'शीला हँसने लगी थी ।

'जानती हो तब भी पूछ रही हो। साल भर में केवल एक दिन ही चलता है यह सब मेरा ।' 'फिर भी आप अपने मुख से कहिये... '

'यह सब कहना अच्छा नहीं लगता है। गन्दा लगता है।'

'जब कहने में अच्छा नहीं लग रहा है। गन्दा लग रहा है। तब जाहिर है... '

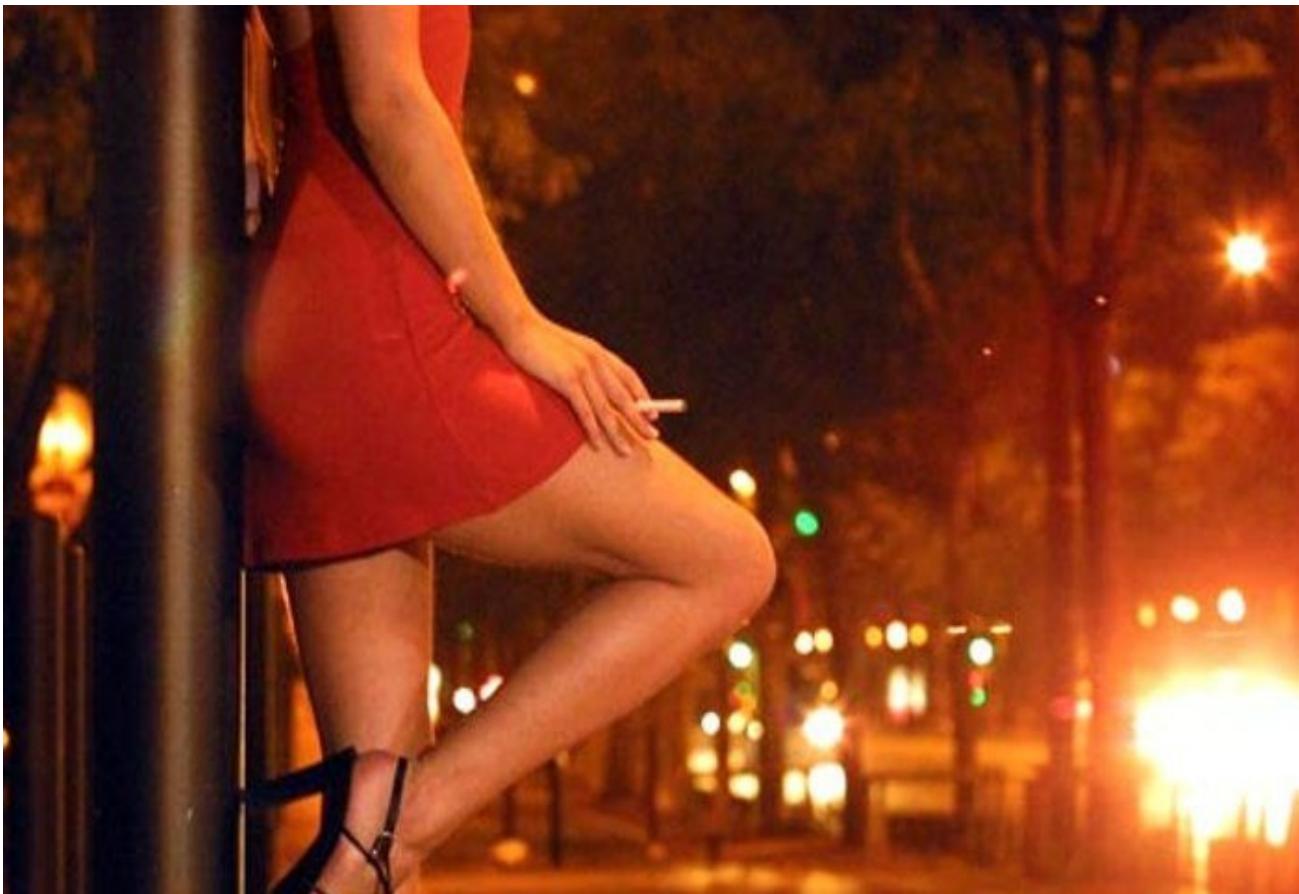
अर्जुन ने कुछ नहीं कहा। वह बहुत ही गहराई से विचार मग्न हो गया।

इस हजार रुपये में बाकी दोनों बच्चों के नये ड्रेस आ जायेंगे ...। अर्जुन ने शीला को जेब के हजार रुपये निकालकर बढ़ाते हुए कहा। शीला ने भर आंखों उसे देखा था तब । वह जीता हुआ विजेता खिलाड़ी जो था ।



रामनाथ साहू  
छत्तीसगढ़

# 'देह विक्रय एक मजबूरी या शानो शौकत भरी ज़िंदगी की लालसा'



भावना ठाकर 'भावु'  
(बैंगलुरु, कर्नाटक)

आज एक विषय पर बहुत चिंतन पेट हैं। इन स्थानों पर लाखों लड़कियां हर किया जीवन में हर समस्या के दो रोज बिस्तर पर परोसी जाती हैं। समाधान होते हैं 'अच्छी राह चुनना ओर दलदल में धसना' स्त्रीयाँ या लड़कीयाँ देह विक्रय का रास्ता खुद चुनती हैं या धकेल दिया जाता है ये सोचनिय मुद्दा है। आखिरि क्यूँ हर बड़े शहर में ये धंधा दीमक की तरह फैल रहा है। देश का सबसे बड़ा रेडलाइट एरिया कोलकाता का सोनागाची इलाका है, दूसरे नंबर पर मुंबई का कमाठीपुरा, फिर दिल्ली का जीबी रोड, आगरा का कश्मीरी मार्केट, ग्वालियर का रेशमपुरा, पुणे का बुधवर

वेश्यावृत्ति को अपनाने के मूलभूत कारण कुछ इस प्रकार माने जाते हैं जिन कारण से ये स्त्रियां वेश्यावृत्ति का रास्त चुन लेती हैं। उसमें सबसे बड़ा आर्थिक कारण होता है। अनेक स्त्रियां अपनी एवं आश्रितों की भूख की ज्वाला शांत करने के लिए विवश होकर इस वृत्ति को अपनाती हैं। जीविकोपार्जन के अन्य साधनों के अभाव तथा अन्य कार्यों के अत्यंत श्रम साध्य एवं अल्पैतनिक होने के कारण वेश्यावृत्ति की ओर आकर्षित होती



है।

या बहुत बार हम सुनते हैं की परिवार के ही किसी सदस्य ने बेच दिया हो या तो एसी मजबूरी आन पड़ी हो की इस गंदगी भरे रास्ते को चुनने के सिवाय

कोई चारा ही ना हो। एसी स्थिति में चलो मान लेते हैं की इस काम को अपना लिया हो, पर क्या ओर को राह नहीं होती ? जो सीधे कदम कोठे की दहलीज़ पर रुक जाते हैं। इस व्यवसाय में हिंसा भी चरम पर होती है दलालों द्वारा या ऐसे कोठे को चलाने वाली मुखिया के द्वारा पीटा जाता है, दमन किया जाता है और मानसिक रूप से अपाहिज लड़कीयाँ डर के मारे विद्रोह नहीं करती और अपना लेती हैं नकारात्मकों।

पर समाज में काम की कोई कमी नहीं आप अपने हुनर और हैसियत के मुताबिक जो काम करना चाहो थोड़ी मसक्कत के बाद मिल ही जाएगा तो क्यूँ कोई जानबूझकर उस गंदगी को अपनाती है ये सवाल है।

इस पेशे में अच्छे घर की लड़कीयों को जाते हुए देखा है महज शानों शौकत

की ज़िंदगी जीने के ख़्वाब पूरे करने शायद पैसा कमाने का बहुत ही आसान ज़रिया होता है। कॉल गर्ल को सुना है एक रात के हज़ारों रूपयों में तोलने वालों की कमी नहीं। माना की पैसा सबकुछ है पर गुज़र बसर करने के लिए इंसान को चाहिए कितने ये आजीविका नहीं शौक पालने के फितूर हुए।

तो दूसरी ओर देखा जाए तो गरीबी और निराशा, वेश्यावृत्ति को और भी हवा देती है। लड़कीयों के शोषण और वेश्यावृत्ति का सीधा-सीधा संबंध, दूटे परिवार, भुखमरी और निराशा भी हो सकता है। उनको लगता है की ज़िंदा रहने के लिए उनके पास वेश्यावृत्ति के अलावा कोई चारा नहीं।

क्यूँ सरकार, कोई संस्था, या आम इंसान इस विकट समस्या के बारे में नहीं सोचता देश के हर छोटे बड़े मुद्दों पर इन सबकी बाज नज़र होती है पर ये मुद्दा तो ज़लन्त है कोई तो आगे आए इसका समाधान ढूँढ़ने। कितनी मासूम इस नकारात्मक में झुल्स रही होगी कोई पाक साफ दुपट्ठा उनके लिए भी बना है क्या ? जो इनके जलते बदन के ज़ख्मों पर नमी की परत बिछाए।

वैसे इस आग को बुझाना नामुमकिन है इतनी बड़ी आबादी को चपेट में ले रखा है की कहाँ से शुरू करें। फिर भी एक कोशिश तो होनी चाहिए मेरे ख़्याल से इस पेशे में लगीं महिलाओं को व्यवसायिक प्रशिक्षण देना चाहिए, और उनके लिए रोजगार के अवसर पैदा किए जाने चाहिए। तो शायद जो मजबूरी में इस दलदल में फ़ंसी हो उसे इज्जत भरी ज़िंदगी जीने का मौका मिलें। ■ ■



# प्रेम पियाला भर भर दीजै



प्रकुल सिंह 'बेचैन कलम'  
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

कहते हैं कि प्रभु श्रीराम के वनगमन राहों को। चुनते हैं कि प्यास में भी जो में, जिस ओर, जिस दिशा से वह निकलते थे; शाख हरिया जाते थे। जन्म लगते हैं शाख बन जाने को भी! यह उतना भी सरल नहीं, जितना प्रतीत होता है। वर्ष चले जाते हैं। जन्म की काया धूमिल हो जाती है। सब सज्जित छूट जाता है। प्रतीक्षा की सघन तपन को समय रेतता रहता है। देह की सीमा छोटी हो जाती है। तभी तो राम वन चुनते हैं चलने को। चुनते हैं पीड़ाओं की न चुकने वाली अन्तहीन राहों को। चुनते हैं कि प्यास का अनुभव है, वह बच जाय। रह जाय। तर करते हैं वे राहों को। राह की नमी को। अनगिन तपश्चर्या को। तभी तो एकान्त को पारते हैं। धन्नियों को ठहराते हैं। राम लोक में उतरते हैं। लोक उन्हें जोहता है। विरह उनसे परितृप्त होता है। जिन्होंने स्वयं को राम के लिए चुन लिया था, वे गति, अगति, जड़, चेतन, सूक्ष्म, स्थूल, हर विधि में विधि के मन्तव्य से हो भर आये। शेष तो राम करेंगे। तृप्ति तो



एक सूक्ष्म संचरण है। वह देह को होता भी कहाँ है! वह तो देहपार है। तब इस बात से क्या प्रयोजन कि प्रभु श्रीराम के समक्ष क्या होकर जाना है। वहाँ तो बस होना है। कोई फूल हो आया कि राम देखकर प्रसन्न होंगे, कि स्पर्श करेंगे। कोई पत्थर होकर बिछ गया कि राम के चरण चूम सके। कोई झरना हो आया कि कण्ठ तक उतर सके। तो कोई सूख गया कि बिछ सकूँ होकर बिछावन, कि छप्पर हो जाऊँ प्रभु की छाया में। जब इतनीं पात्रता आवे, जब इतना प्रेम भरे, तब क्योंकर न राम वनगमन करें।

प्रेम ऐसी ही पात्रता है। एक ऐसी अवस्था जहाँ लघुता में भी परमावस्था है। जब कोई प्रेम चुनता है तब वह और कुछ चुने जाने के भार से मुक्त हो जाता है। तब गोपी होकर भी संतुष्टि है। विरह भी किनारा है। तब मीरा होकर समय को सहस्र बरस पहले धकेला जा सकता है। प्रेम तो सूर को भी दृष्टि दे जाता है।

रामकृष्ण को सीढ़ियों पर लेटाकर सुदूर आकाश में उतार जाता है। काली स्वयं सेवा करने लगती हैं। आदिशंकर अन्तिम में ठहर जाते हैं। प्रेम में ही वैतन्य पुलकित होकर नाचने लगते हैं। प्रेम की घाटियों से ही पर्वत का उत्कर्ष होता है। देह तो भोक्ता है। माध्यम। किन्तु वह जो अनुभावित है, वह तो देह के परे है।

प्रेम की कोई मुक्ति नहीं! यह सदा रहेगा। अस्तित्व कभी मरता नहीं। प्रेम तो अस्तित्व का कारक है। प्रेरक है। इस अनन्तता में यों ही सबकुछ होता रहेगा। कृत्य होंगे। फल होगा। किन्तु प्रेम इन सबसे अछूता निकल जावेगा। वह सदा देहातीत रहेगा। शब्दातीत होकर शब्दों को उनकी सीमा में नाप जायेगा। कहने को कुछ होगा और कहा कुछ जायेगा। यह अपने राग, अपनी निर्मूल धनियों से जगत को फेरता रहेगा। जो उतरेगा, यह उसे उतारेगा। ढाल लेगा स्वयं में। यह चुपचाप व्याप जाता है। निशशब्द। अनाहट। नैरन्तर्य। रक्ती भर भी नहीं छोड़ता। सबकुछ निचोड़ लेता है। और जब कुछ भी शेष न रहे तो पुनः रहने को क्या ही रहे।

देखता हूँ दिन किसी भाप की भाँति अदृश्य हो रहा। वय की नाप, मनुष्यों के मापन में कहाँ अटती है। वर्ष गिन लेने को हैं। ज्ञान धर लेने को। मुक्ति को कैसे मापा जाय भला! जितना जानो, यह अखण्डता

उसे बौना करती जाती है। बौना संसार है यह। उपस्थित को पुनः अपने निष्कर्षों से सिद्ध करते जाना ही मानवीय उपादेयता। किन्तु कहीं तो कुछ है जो अविभाज्य है। जो उपयोगिताओं से पृथक होकर अपनी सत्ता में, विद्यमानता में गतिमान है। उपयोग तो इस जीवन भर है। किन्तु इस जीवन के पार का क्या। कोई ऋषि मुझसे कहता है कि ठहरो। कोई तत्वदर्शी चुप करा जाता है और कहता है कि चरैवेति! चरैवेति!

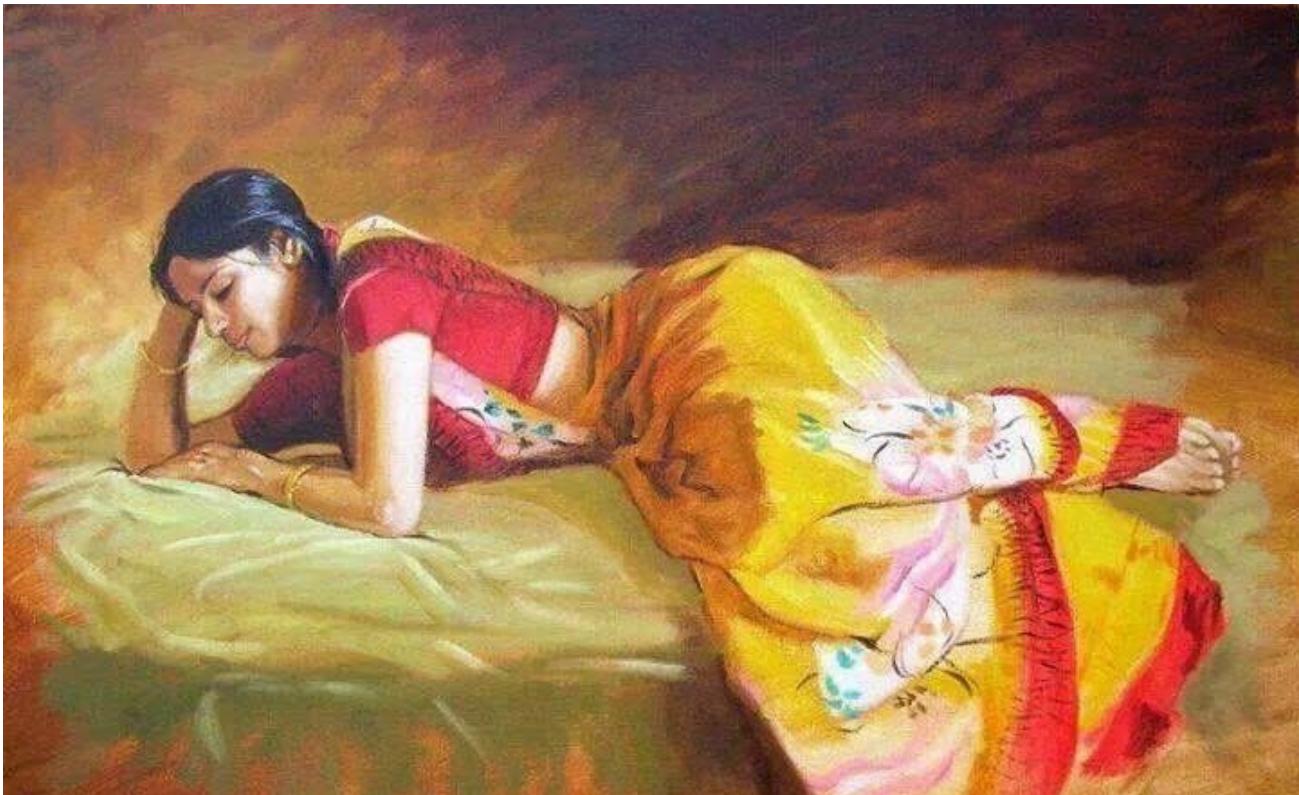
तब प्रेम पियाला लेता हूँ। उसे नदी देकर जाती है। पहाड़ पिला जाते हैं। कोई चुप सी चिड़िया औचक ही उसमें से एक बूँद पार जाती है। कोई शिशु अपनी बाहों को खोले, दौड़ता हुआ मुझसे लिपट जाता है। उसकी तुतलाती बोलियों से पियाला कुछ और छलक जाता है। नभ में उतराता शुकवा उसे खींचता है। सप्तर्षि अपने सात पाये बिछाकर मुझे बुलाते हैं। तारे चुपचाप घेर लेते हैं। निज्ञान तो बस एक ही है। उसके सङ्ग ही पी लेने को जीवन चलकर आया है। प्रेम तो दुरवसित है। भर जाय तो छलकेगा ही, आ जाय तो झलकेगा ही...!

और अन्त में

हम सभी को ऐसा ही प्रेम पियाला भर भर मिले, इसी शुभेच्छा के साथ आकाश भर नमन



# तुम्हारे बिना अधूरा हूँ मैं.....



'तलाक केस के नियमानुसार आप दोनों को सलाह दी जाती हैं कि एक बार काउंसलर से मिलकर आपसी मतभेद मिटाने की कोशिश करें।' तलाक केस की सुनवाई करते हुए जज ने कहा।

अगले ही मंगलवार सुषमा और अजीत दोनों काउंसलिंग सेंटर पर जाते हैं। सुषमा के साथ उसके भैया-भाभी तो अजीत के साथ उसके कुछ दोस्त थे। काउंसलर ने सिर्फ सुषमा और अजीत को अंदर आने को कहा। अंदर आते ही काउंसलर ने पूछा - 'आप दोनों अपनी मर्जी से तलाक चाहते हैं या किसी के बहकावे / दबाव में आकर।' दोनों को चुप

देखकर काउंसलर ने कहा, 'यही टेबल पर बैठकर थोड़ी देर आपस में बात कर लीजिएं आप दोनों।'

टेबल पर बरकरार चुप्पी को तोड़ते हुए अजीत ने पूछा - 'कैसी हो, सुषमा ?'

'ठीक हूँ, आप कैसे हो? खाना और दवा इत्यादि टाइम पर खाते हो न, आपका हेल्थ डाउन दिख रहा ?'

'हाँ, तुम्हारे नाराज होकर जाने के बाद ज़िम्मेदारी एवं तनाव दोनों बढ़ गया। आज भी बहुत मिस करता हूँ तुम्हें।'

'मैं भी आपको बहुत मिस करती हूँ, पर.....।'



अंकुर सिंह  
हरदासीपुर, चंद्रवक

'पर क्या, सुषमा ?' अजीत ने सुषमा के हाथों पर हाथ रखते हुए पूछा।

'अजीत, मैं अपने घर की सबसे छोटी बेटी हूं सभी ने मुझे काफी लाइफ प्यार दिया है। कभी किसी चीज कमी नहीं रही मुझे।'

'हाँ, तो फिर सुषमा .छछ...!'

'छोटे के कस्बे में रहने और साँस-ननद के रोका-टोकी के साथ इतनी जिम्मेदारी मेरे से नहीं हो पाती। फ्री लाइफ जीना पसंद किया है मैंने हमेशा।'

'इसमें क्या सुषमा !, तुम्हारे साथ मैं हूँ न, कुछ दिन एडजस्ट कर लेती, धीरे-धीरे तुम उन्हें समझती और वह लोग तुम्हें।'

'पर अजीत, मैंने तुमसे शादी की है, तुम्हारे साथ रहना पसंद करूँगी।'

'ठीक है सुषमा, मैं भी तुम्हें अपने साथ रखना चाहता हूं और रही बात छोटे के कस्बे में रहने की तो वहाँ तुम्हें रहना ही कितने दिन था, मेरे छुट्टियों के दिन में मेरे साथ या फिर कभी-कभार किसी जरूरत पर कुछ दिन या माह मेरे बिना। बाकी समय मेरे साथ रहना था तुम्हें।'

'फिर भी अजीत.....!'

'फिर भी क्या, तुम्हारे मन में कोई बात थी तो मुझसे कहती, नाराज होकर तुम्हारा मायके चले आना कितना सही है, सुषमा?'

'मैंने आपको कॉल किया था बताने के लिए। लेकिन आप ना मुझे समझ पाए, ना मेरी इच्छाओं को'

'सुषमा उस दिन मैं मीटिंग था। कांफ्रेंस रूम में होने के बावजूद मैंने तुमसे

बात की। सोचा शाम को घर पहुँच शांति से दुबारा बात करूँगा तुमसे। शाम को कई बार तुम्हें फोन किया पर लगा नहीं। माँ से पूछा तब पता चला तुम भैया के साथ मायके चली आई। कई बार मैंने तुमसे बात करने की कोशिश किया। तुम्हारे भैया-भाई को भी फोन किया था मैंने त तब जाकर पता चला तुम मुझसे बात नहीं करना चाहती।' अपनी बात आगे कहते हुए अजीत ने कहा- 'तुम्हें मनाकर वापस ले आने के लिए मैंने अगले महीने सहारनपुर आने का भी प्लान किया था। लेकिन उसके पहले नोटिस मिल गई मुझे तलाक की।'

'पर अजीत, .छ....!'

'पर क्या सुषमा, तुम बात करने को तैयार नहीं थी, बिना बात किए हमारे बीच नाराजगी कैसे खत्म होती ? कैसे भूल गई तुम ?...पहली बार जब सहारनपुर में तुमसे मिला था और कुछ पल के मुलाकात में तुम्हारे हाथ को पकड़ते हुए मैंने कहा था कि ये हाथ पकड़ रहा हूं मेरे आखिरी सांस तक छूटने मत देना अपने हाथों को, हमेशा मेरे साथ रहना। आज उसके कुछ ही महीने में हमारा रिश्ता टूटने के कागार पर आ गया?'

'मैं भी आपको छोड़ना नहीं चाहती हूं, पर शादी के बाद मुझे बहुत सी चीजें पसंद नहीं आई। जैसे तुम्हारे बिना कस्बों की लाइफ इत्यादि।'

'जो चीजें पसंद नहीं आई उस पर हम दोनों बात करते तो उसका कोई न कोई हल जरूर निकल आता। रिश्ते बरकरार रखने के लिए कुछ तुम कहती कुछ मैं....हम दोनों समझते एक दूसरे

को ....! आखिर मेरे विश्वास पर तुम अपना घर परिवार छोड़ यहाँ आई थी। जो समस्याएँ थी उस पर बात करते हम दोनों बड़े बुजुर्गों ने भी कहा है कि बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान आपसी संवाद से निकल आता है। बातचीत बंद न होने के कारण आज हमारे रिश्ते खत्म करने के कागार पर आ गए।' दुखी स्वर में अजीत ने अपनी बात खत्म की।

'मैंने आपसे शादी किया है आपके साथ रहने के लिए। आपके मम्मी पापा चाहे तो हमारे साथ आकर रह सकते हैं चंडीगढ़ में।'

'क्या लगता है तुम्हें सुषमा, मुझे तुम्हारे बिना अच्छा लगता है? टिकट तुम्हारा भी कराया था मैंने साथ आने के लिए लेकिन अचानक से मम्मी की तबीयत खराब होने के कारण मुझे अकेले आना पड़ा। मेरी पत्नी होने के साथ-साथ तुम उनकी बहू भी हो। जरूरत के बहु दोनों को दोनों के परिवार को अपना मानकर उनके साथ होना जरूरी हैं। मम्मी के डॉक्टर खुराना से मेरी बात हुई है। डॉक्टर साहब बोल रहे थे कि एक से दो महीने के अंदर मम्मी चलने फिरने लायक हो जायेंगी।'

'ये तो बहुत अच्छी खबर है अजीत, चिंता मत करो आप भगवान जल्दी ठीक कर देंगे मम्मी जी को। वैसे आगे क्या करने सोचा है आपने।'

'सोचना क्या सुषमा, मैंने तुमसे प्यार किया है। मैं तुम्हें पसंद करता हूँ ये बात घर पर बताकर सबको राजी किया था मैंने शादी के लिए। बस दुःख इतना है कि ये रिश्ता मैं बचा नहीं पाया।' - अजीत ने अपनी बात को विराम देते हुए कहा।

'इतना होने पर भी आज क्या आप मुझसे उतना ही प्यार करते हो ?' - सुषमा ने पूछा ।

'हाँ सुषमा, भले ही कल हमारे रिश्ते नहीं रहेंगे पर तुम्हारे साथ बिताए हर एक पल का अहसास मेरे साथ रहेंगे हैं।'

'अच्छा ठीक है, चलो अब मैं चलती हूँ। भैया-भाभी इंतजार कर रहे होंगे, लेट हो रहा मुझे अब।'

'ओके सुषमा अपना ख्याल रखना ! सोचा था बात करके सब ठीक कर लूँगा। पर कोई बात नहीं, कोर्ट के अगली तारीख को कोर्ट नहीं आऊंगा मैं। डाक से भिजवा देना पेपर मैं साइन कर दूँगा तलाक के पेपर पर।'

'ओके मत आना ! आपको आने की

जरूरत भी नहीं हैं लेकिन हो सके तो सहारनपुर आ जाना मुझे ले जाने के लिए।'

'क्या ....क्या.... क्या कहा तुमने सुषमा ? ' अजीत ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।'

'वही जो आपने सुना, मैं भी आपके फोन को नजरअंदाज न करती तो ये मसला आपसी सहमति से कब का सुलझ गया होता। रिश्ते बचाने के लिए मैंने भी समय नहीं दिया और लोगों के बहकावे (रोका-टोकी) में आकर रिश्ता तोड़ने की सोच ली।'

'वही सुषमा, ब्याह कर तुम्हें मैं लाया हूँ। तुम्हें खुश रखने की जिम्मेदारी मेरी है। लेकिन उन जिम्मेदारियों के साथ

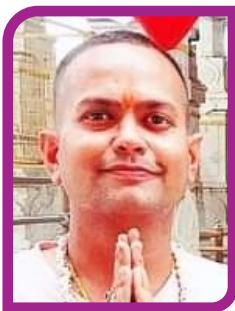
हमें इस जीवन के सफर में अनेक

जिम्मेदारियों का रोल अदा करना होता है और इसमें हमें एक दूसरे का पूरक बनना होगा। वादा करो आगे फिर कभी जीवन के इस सफर में लड़खड़ाई तो मुझे अकेला छोड़कर वापस नहीं जाओगी बल्कि एक आवाज देकर मेरा हाथ थामकर साथ चलोगी।'

'ठीक है बाबा, अब वादा करती हूँ मैं, कभी नाराज होकर नहीं जाऊंगी। तुम भी अब थोड़ा सा स्माइल दें दो।' - सुषमा ने कहा ।

इतने में अजीत सुषमा को गले लगाते हुए बोल पड़ा, 'पगली कभी छोड़ के मत जाना। तुम मेरी अर्धागिनी (आधा अंग) हो और तुम्हारे बिना अधूरा हूँ मैं॥ आई लव यू सोना, बाबू.....।'

## तेरा सानिध्य



राजीव डोग्रा  
कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

मैं तेरे पास रहूँ  
तेरे साथ रहूँ  
यही काफी है।  
मंत्रों का बोझ  
तंत्रों का ओज

भारी सा लगता है।  
तेरी गोद में  
ममता भरी छाया में  
सोया रहूँ  
यही काफी है।  
जन्म जन्मांतर की सिद्धियां  
युगों-युगों की रिद्धियां  
अब भारी सी लगती है  
तेरा हाथ पकड़ कर  
बस चलता रहूँ  
हर जगह  
हर क्षण  
यही काफी है।

## दशहरा, दीपावली व छठ पूजा की हार्दिक शुभकामनायें



### देवेन्द्र कुमावत

जयपुर राजस्थान

कंप्यूटर हार्डवेयर एंड सॉफ्टवेयर एक्सपर्ट, माइक्रोसॉफ्ट सर्टिफाइड  
एंकर, सिंगर, एक्टर, स्क्रिप्ट राइटर, लेखक  
आर. जे. जयपुर रेडियो, साइबर क्राइम एक्सपर्ट

## दशहरा, दीपावली व छठ पूजा की हार्दिक शुभकामनायें



### डॉ निशा अग्रवाल

जयपुर, राजस्थान

एजुकेशनिस्ट, लेखिका, ऐकर, आर. जे. जयपुर रेडियो,  
कवयित्री, गायिका, स्क्रिप्ट राइटर,  
संपादक, साहित्यिक मंच संचालिका

With Best Compliment from

Karam Jeet Singh  
Director

# SIMRAN HOSPITAL

Deep Diagnostic Centre

Near ICICI Bank, Nai Basti G.T. Road, Mughalsarai, (DDU) Chandauli (U.P.) - 232101  
Mob. : 9415227971, Ph. No. 05412-253125, Email : karamjeetmatreja@gmail.com

एक स्वाद जो सदा रहे याद!



# मनोकामना फूड्स

शुद्ध शाकाहारी पारिवारिक रेस्टोरेन्ट



पता - 925, सिंह मैशन, मुगलसराय, मो. : 7408408123

RNI: UPHIN/2017/75716

## SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)

C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA, CHETGANJ, VARANASI  
Website : [www.sachkidastak.com](http://www.sachkidastak.com), E-mail : [sachkidastak@gmail.com](mailto:sachkidastak@gmail.com)  
Mob. : 8299678756, 9598056904

NOVEMBER, 2021

PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA



बरोसा अपनों का  
10 करोड़ भारतीयों का  
**बरोसा हीरो का**

**Hero**



अवतार सिंह

**अवतार ऑटो स्पेयर्स | मुगलसराय, चन्दौली**  
मो. 7290086708  
अब कटसिला में भी

“विद्यार्थियोंका गौरव”

स्थापित- 1998

# एक्सीलेन्ट बॉय्स इन्स्टीट्यूट

कैलाशपुरी, पं दीनदयाल उपाध्याय नगर, मुगलसराय, चन्दौली

मो. नं: 9621503924, 8299678756, 9598056904

पाठ्यक्रम व्यवस्था- 9, 10, 11, 12, यू.पी. बोर्ड, सी.बी.एस.ई. बोर्ड

**ब्रजेश कुमार**

प्रबंधक

जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान  
25 वर्षों से अधिक का अनुभव



**रतन कुमार दीक्षित**

फिजियो व मेड  
35 वर्षों का पढ़ाने का अनुभव



**मनोज उपाध्याय**

मेड व फिजियो  
15 वर्षों का अनुभव

